JUNE 2020 - 30:00

मरयम

जन्नत तक के साथी

एक्स्ट्रा शीट

जिसने अपना खेत न सींचा

दिल से दिल तक

मन्न व सलवा

खुदा रहमतें नाज़िल करे!

इमाम जाफ़र सादिक़ [अ०]

अल्लाह के रसूल[स०] ने फ़रमाया है कि जो भी अल्लाह के लिए और अल्लाह के डर से गुनाह छोड़ देगा, अल्लाह क़यामत के दिन उसे ख़ुशियाँ नसीब करेगा।

RNI No: UPHIN/2012/43577 Monthly Magazine

मरयम

Vol:9 | Issue: 04 | JUNE, 2020

ईद मुबारक

इस महीने आप पढ़ेंगी...

जन्नत तक के साथी	7
अल्लाह के ख़ज़ाने की चाबियाँ	8
नमाज़ को हल्का समझने वाले	11
एक्स्ट्रा शीट	12
मन्न व सलवा	15
एक ख़त ख़ुदा के नाम	19
शरई अहकाम	21
इमाम सादिक़ अ० फ़रमाते हैं	22
शुक्र का सजदा	25
तौहीद (28)	26
क़ानून ख़ुदा का, इबादत भी ख़ुदा की	27
जिसने अपना खेत न सींचा	29
दिल से दिल तक (4)	31
डिश	34
सूरए काफ़िरून	36
आइए! अल्लाह के बंदों की मदद करें	38
तो मानते क्यों नहीं?	40

Chief Editor
S. Mohd. Hasan Naqvi

Editorial Board
Nazar Abbas Rizvi
Mohd. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi
Imtiyaz Abbas Rizwan

Managing Editor
Abbas Asghar Shabrez

Executive Editor
Mohammad Aqeel Zaidi

Distribution Manager
Baqir Hasan Zaidi

Contributors
Sajjad Haider Safavi
M. Husain Zaidi

Graphic Designer
Siraj Abidi
98390 99435
imagine graphix

Typist
S. Sufyan Ahmad

'मरयम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामन्दी हो, यह ज़रूरी नही है। 'मरयम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कार्रवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयम' की प्रॉपर्टी हैं।

इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले संपादक से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयम' में छपे किसी भी कॉन्टेन्ट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कार्रवाई प्रकाशन तिथी से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद हम किसी भी तरह की पूछताछ और कार्रवाई पर जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।

संपादक 'मरयम' के लिये आने वाले कॉन्टेंट्स में ज़रुरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer, publisher & Proprieter S. Mohammad Hasan Naqvi
printed at Swastika Prinwell Pvt. Ltd., 33, Cant. Road, Lucknow and
published from 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003

MARYAM A/C: 55930 10102 41444 **Union Bank of India**
Tahseenganj Branch (Unity Branch) Lucknow **IFSC: UBIN0555932**

सब्क्रिप्शन के लिए चेक/ड्राफ़्ट पर सिर्फ़ **MARYAM** लिखिए।
चेक, ड्राफ़्ट और मनी आर्डर इस पते पर भेजिए:
Mohd. Hasan Naqvi, 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 99566 20017, email: maryammonthly@gmail.com

Head Office: Imambada Ghufranmab, Chowk Mandi, Lucknow
Registered Office: 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

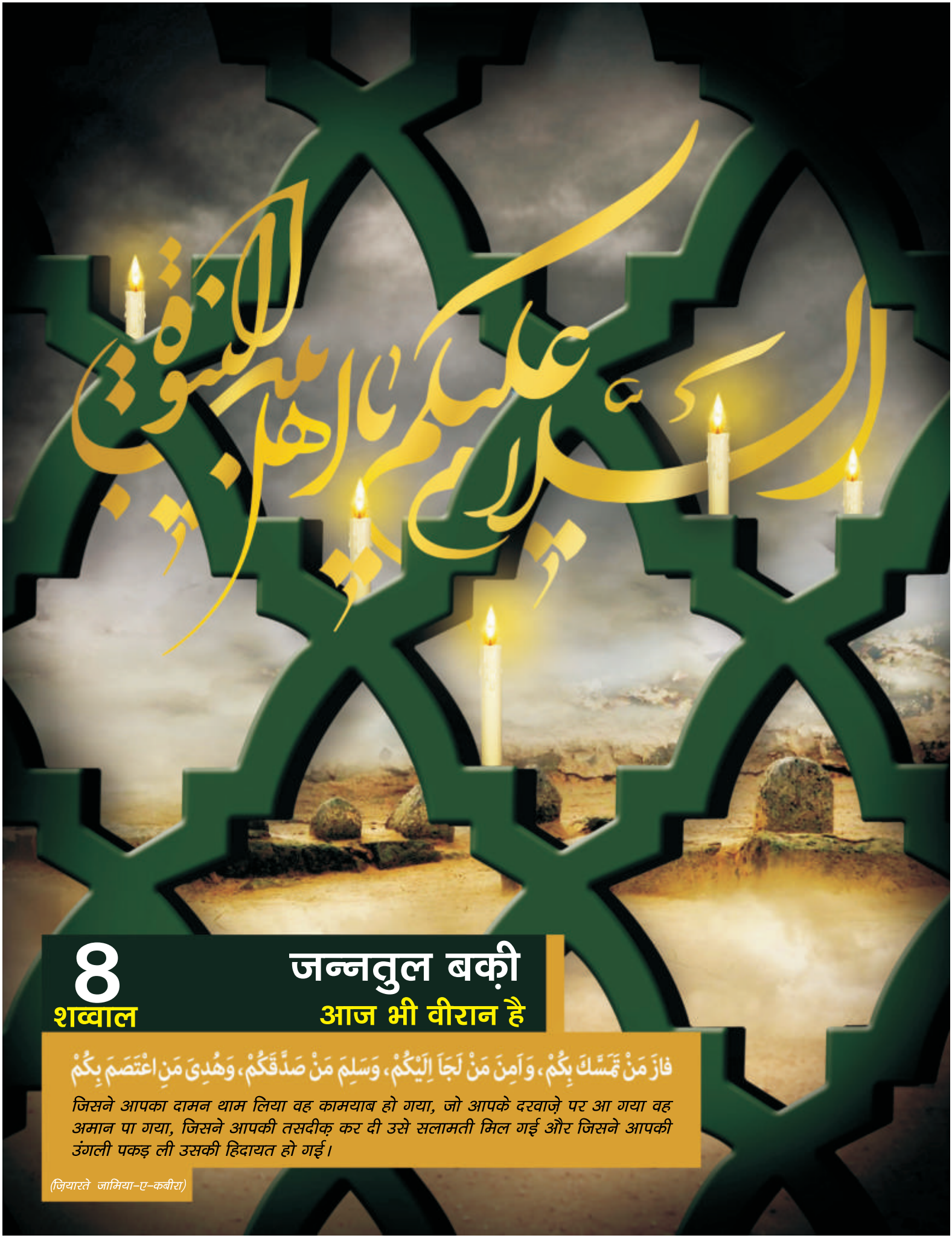

8 शव्वाल

जन्नतुल बक़ी
आज भी वीरान है

فازَ مَنْ تَمَسَّكَ بِكُمْ، وَاَمِنَ مَنْ لَجَاَ اِلَيْكُمْ، وَسَلِمَ مَنْ صَدَّقَكُمْ، وَهُدِيَ مَنِ اعْتَصَمَ بِكُمْ

जिसने आपका दामन थाम लिया वह कामयाब हो गया, जो आपके दरवाज़े पर आ गया वह अमान पा गया, जिसने आपकी तसदीक़ कर दी उसे सलामती मिल गई और जिसने आपकी उंगली पकड़ ली उसकी हिदायत हो गई।

(ज़ियारते जामिया-ए-कबीरा)

जन्नत तक के साथी

■ सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह ख़ामेनई

हज़रत अली[अ०] और हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] की शादी को अभी कुछ ही दिन हुए थे। ऐ दिन अचानक अल्लाह के रसूल[स०] ने हज़रत अली[अ०] से पूछाः ऐ अली! तुम ने फ़ातिमा को कैसा पाया ?

हज़रत अली[अ०] ने एक ऐसी बात कही जो हज़रत फ़ातिमा[स०] की अज़मत को बयाँ कर रही थी।

हज़रत अली[अ०] ने फ़रमायाः

''ऐ अल्लाह के रसूल! वह ख़ुदा की इताअत में बेहतरीन साथी हैं।''

इस तरह दुनिया का बेहतरीन दामाद ख़ुदा के साथ अपनी मोहब्बत से यूँ पर्दा हटा रहा है। साथ अपनी फ़ैमिली लाइफ़ की कामयाबी का रास्ता दुनिया के सभी जवानों को साफ़-साफ़ दिखा रहा है।

हज़रत अली[अ०] की इस बात से हमें यह मैसेज मिल रहा हैः

''ऐ अली[अ०] को अपना इमाम मानने वाले जवानो और ऐ हज़रत फ़ातिमा[स०] को अपना आइडियल मानने वाली दुलहनो!

सिर्फ़ ख़ुदा और उसकी इताअत के लिए एक-दूसरे के हाथ थाम लो और उस वक़्त तक एक-दूसरे का हाथ थामे रहो जब तक कि जन्नत में न पहुँच जाओ।''

वक़्त की घड़ी की सूईय्याँ बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रही हैं और दुनिया सबके लिए एक जैसे रास्ते पर चलते हुए तेज़ी से अपने डेस्टिनेशन की तरफ़ क़दम बढ़ा रही है।

शादी-ब्याह पर एक नज़र डालिए! कल आपके माँ-बाप भी दूल्हा-दुल्हन थे और इस बात को अभी बहुत ज़्यादा टाइम नहीं गुज़रा है। इसी तरह आप भी आने वाले कल के माँ-बाप हैं और एक दिन आपको भी अपने बच्चों की शादी के प्रोग्राम में शामिल होना है। इसी को कहते हैं ज़िन्दगी के आसमान से वक़्त के बादलों का तेज़ी से गुज़रना। वह चीज़ जो आपकी ज़िन्दगी और आपकी शादी के बाद की दुनिया को ख़ुदा की मोहब्बत के सूरज की रौशनी में हमेशा की ज़िन्दगी से मिलाती है वह सिर्फ़ ''तक़वा'' और ''ख़ुदा की इताअत'' है। एक-दूसरे के ईमान को मुकम्मल और मज़बूत करने में एक-दूसरे की मदद कीजिए और एक-दूसरे के हाथ से ''ख़ुदा की याद'' का मीठा शरबत पीजिए।

आपकी कोशिश होना चाहिए कि शैतानी हमलों के सामने एक-दूसरे की मज़बूत ढाल बनिये और दीनी उसूलों और दीनी अहकाम पर चलने में एक-दूसरे की मदद कीजिए और एक-दूसरे का हाथ बटाईये।

कामयाबी क्या है ? ज़िन्दगी का आराम और सुकून, सआदत और अमन का एहसास। बड़े-बड़े फ़ंकशंस और फ़ुज़ूलख़र्ची किसी को कामयाब नहीं बनाती।

इसी तरह मेहर की बड़ी-बड़ी रक़में और जहेज़ की भरमार भी इन्सान की कामायाबी में किसी भी तरह का रोल नहीं निभा सकती। यह सिर्फ़ शरीअत की ही पाबन्दी है जो इन्सान को कामयाबी और सआदत तक ले जाती है।

एक-दूसरे को जन्नती बनाईये

शादी और लाइफ़ पार्टनर का सेलेक्शन इन्सान की ज़िन्दगी में काफ़ी गहरा असर डालता है। बहुत सी ऐसी बीवियाँ हैं जो अपने शौहरों को जन्नती बना देती हैं। इसका उलटा भी होता है। बहुत से मर्द भी अपनी बीवियों को जन्नती बना देते हैं।

अगर मियाँ-बीवी फ़ैमिली सिस्टम की अहमियत को समझें तो उनकी ज़िन्दगी अमन और सुकून से भर जाएगी। फिर दोनों एक बेहतरीन शादीशुदा ज़िंदगी आराम से जी पाएंगे।

कभी ऐसा भी होता है कि मर्द ज़िन्दगी में ऐसे मोड़ पर पहुँच जाता है जहाँ उसके सामने दो रास्ते होते हैं और उनमें से किसी एक रास्ते का चुनाव उसके लिए ज़रूरी होता हैः या दुनिया या हिदायत का सही रास्ता।

यहाँ उसकी बीवी एक बहुत ख़ास रोल निभाती है। वह उसे पहले रास्ते की तरफ़ भी ले जा सकती है और या दूसरे रास्ते की तरफ़ भी।

कभी इसका उलटा भी होता है यानी शौहर अपनी बीवी पर असर डालता है।

आप दोनों मियाँ-बीवी एक साथ मिलकर अच्छे और सही रास्ते के चुनाव में एक-दूसरे की मदद कीजिए।

आप दोनों दीन पर अमल करने, ख़ुदा और इस्लाम के रास्ते में क़दम उठाने, हक़ और सच्चाई के रास्ते में अपना सफ़र जारी रखने के लिए एक-दूसरे की मदद कीजिए और गुमराही से एक-दूसरे को बचाईये।

(ईरान की मिसाल ली जाए तो) इस्लामी इन्क़ेलाब की कामयाबी से पहले और उसके बाद शुरु के बहुत कठिन सालों और जंग के मुश्किल ज़माने में बहुत सी औरतों ने अपने सब्र से और मुश्किलों को बर्दाश्त करके अपने शौहरों को जन्नती बनाया है। मर्द जंग के मैदानों में गये और उन्होंने जंग की कठिनाईयों और ख़तरों को मोल लिया, इधर यह औरतें घरों में अकेली रह गईं और इन्होंने अकेले मुश्किलों का मुक़ाबला किया लेकिन ज़बान पर किसी भी तरह की शिकायत नहीं लाईं। इस तरह उन्होंने अपने शौहरों को जन्नत का मुसाफ़िर बना दिया। जबकि वह ऐसा भी कर सकती थीं कि उनके शौहरों को मैदाने जंग में जाने ही न देतीं लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया और सब्र का दामन भी हाथ से नहीं छोड़ा। बहुत से ऐसे शौहर भी थे जिन्होंने अपनी बीवियों को जन्नत का रास्ता दिखाया है, उनकी हिदायत की है, उनका साथ दिया है, और उनकी मदद से यह औरतें इस क़ाबिल हुईं कि ख़ुदा के रास्ते में क़दम बढ़ा सकें।

इसका उलटा भी हुआ है। बहुत सी औरतें और मर्द ऐसे थे जिन्होंने एक-दूसरे को जहन्नमी बना दिया।

आप दोनों मोमिन जवान हैं इसलिए एक-दूसरे की मदद कीजिए। एक-दूसरे को जन्नती और कामयाब बनाईये। इल्म हासिल करने, कमाल हासिल करने, परहेज़गारी व तक़्वा हासिल करने और सादा ज़िन्दगी गुज़ारने में एक-दूसरे की मदद कीजिए।

एक-दूसरे को जगाईये

मियाँ-बीवी के दिलों के एक होने और एक-दूसरे की मदद करने का मतलब यह है कि ख़ुदा के रास्ते में एक-दूसरे की मदद कीजिए।

अगर बीवी देखे कि उसका शौहर गुमराही का शिकार हो रहा है, कोई ग़ैर-शरई काम कर रहा है, या हराम कमाई की तरफ़ क़दम बढ़ा रहा है या बुरे लोगों के साथ उठने-बैठने लगा है तो सबसे पहले अगर कोई उसे इन सारे ख़तरों से बचा सकती है वह उसकी बीवी है। या अगर कोई आदमी अपनी बीवी में इसी तरह की बुराईयाँ देखे तो उसे बचाने वालों में सबसे पहले उसका शौहर ही हो सकता है।

हाँ! एक-दूसरे को बुराईयों से रोकने और हर तरह के ख़तरों से बचाए रखने के लिए ज़रूरी है कि मोहब्बत भरी और मीठी ज़बान सही बात की जाए। बदतमीज़ी और ग़ुस्से से बिल्कुल काम नहीं लेना चाहिए। मियाँ-बीवी में से हर एक की ज़िम्मेदारी है कि एक-दूसरे की हिफ़ाज़त करें ताकि ख़ुदा के रास्ते में मज़बूती के साथ डटे रह सकें।

एक-दूसरे का साथ दीजिए और एक-दूसरे की मदद कीजिए, ख़ास कर दीनी कामों में।

अगर आप यह देखें कि आपका शौहर या आपकी बीवी नमाज़ की पाबन्द नहीं है, सच बोलने या न बोलने से उसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता है, शौहर लोगों के माल में लापरवाही से काम लेता है या अपने काम के बारे में बेईमान है तो आपकी ज़िम्मेदारी है कि एक-दूसरे को ग़फ़लत की नींद से जगाईये, एक-दूसरे को बताईये, समझाईये और मदद कीजिए ताकि दोनों एक दूसरे को सुधार सकें।

हमेशा इस बात का ध्यान रखिये आपका लाइफ़ पार्टनर महरम-नामहरम, नजिस-पाक और हलाल-हराम की परवाह करता है या नहीं।

अगर उसे परवाह नहीं है तो आप उसे ध्यान दिलाइए। उसका ध्यान इन चीज़ों की तरफ़ मोड़िये और उसकी मदद कीजिए ताकि वह अपने अंदर सुधार ला सके। अगर वह झूठ बोलता है और ग़ीबत करने का आदी है तो आपकी ज़िम्मेदारी है कि उसे समझाईये, लेकिन लड़िये नहीं, झगड़िये नहीं, अपने घर का माहौल ख़राब न कीजिए और उस इन्सान की तरह न बन जाईए जो अलग बैठ कर सिर्फ़ ज़बान के तीर चलाता है।

एक नर्स की तरह
गार्ड की तरह नहीं

मियाँ-बीवी को चाहिए कि सही रास्ते और सिराते मुस्तक़ीम पर चलने में एक-दूसरे की मदद करें। अगर वह यह देखते हैं कि शौहर या बीवी दोनों में कोई अच्छा काम करना चाहता है तो उसकी हिम्मत बंधाए और उसे शौक़ दिलाएं। अगर देखते हैं कि लाइफ़ पार्टनर कोई ग़लती या गुनाह कर रहा है तो पूरी कोशिश होना चाहिए कि उसे समझाया जाए और रोका जाए।

दोनों के कामों की बुनियाद एक-दूसरे के अंदर सुधार लाना होना चाहिए, लेकिन यह काम एक गार्ड या चौकीदार की तरह नहीं करना है जो हमेशा सर पर डण्डा लिये खड़ा रहता है बल्कि एक समझदार नर्स की तरह यह काम करना है जिसे बीमार के साथ हमदर्दी होती है या फिर मेहरबान माँ-बाप की तरह यह काम किया जाना चाहिए। ●

अल्लाह के ख़ज़ाने की चाबियाँ

■ सज्जाद सफ़वी

ख़ुदा ने इन्सान को दुआ का हुक्म दिया है और अपनी हाजतों के लिए अपनी बारगाह में आने की इजाज़त दी है। उसने इन्सान को अपनी इताअत का हुक्म दिया है और अगर इताअत करते हुए इन्सान से ग़लतियाँ हो जाएं तो मायूस होने से रोका भी है बल्कि हुक्म दिया है कि ऐसे में इन्सान पछतावे के साथ ख़ुदा की बारगाह में हाज़िर हो और अपने गुनाहों की माँफ़ी माँगे तो ख़ुदा उसे माफ़ कर देगा।

इसी लिए उसने अपने गुनाहगार बन्दों के लिए हमेशा ''तौबा'' का दरवाज़ा खुला रखा है। इसलिए इन्सान जब चाहे ख़ुदा को पुकार सकता है। वह जब ग़फ़लत की नींद से जाग जाए और अपने गुनाहों पर उसे पछतावा हो तो वह ख़ुदा की तरफ़ लौट सकता है।

हज़रत अली[अ०] अपने ख़त में इस बारे में कुछ बहुत ख़ास बातें बता रहे हैं:

ख़ुदा से मुनाजात

''जब भी आवाज़ दो वह फ़ौरन सुन लेता है और जब मुनाजात करो उसे उसकी भी ख़बर रहती है। तुम अपनी ज़रूरतें उसके सामने बयान कर सकते हो। उसे अपने हालात बता सकते हो। अपने दुखों की शिकायत कर सकते हो। अपने दुखों को ख़त्म करने की दुआ कर सकते हो। अपने कामों में मदद माँग सकते हो।''

यहाँ इमाम अली[अ०] कुछ बहुत ख़ास बातें बता रहे हैं जिनकी तरफ़ ध्यान देना बहुत ज़रूरी है:

1- दुनिया का कोई अच्छे से अच्छा आदमी क्यों न हो उसका दरवाज़ा हर वक़्त और हर एक के लिए खुला नहीं रहता बल्कि एक इन्सान होने के नाते उसकी कुछ मजबूरियाँ होती हैं जिसकी वजह से दूसरों की मदद करने और दूसरों की ज़रूरतों को पूरा करने की उसकी ताक़त की एक हद होती है लेकिन ख़ुदा के यहाँ किसी तरह की न कोई मजबूरी है और न कोई ऐसी ज़रूरत कि उसका दरवाज़ा बंद हो जाए। क़ुरआन की ज़बान में ''उसे न नींद आती है न ऊँघ आती है।''

इसलिए उसकी बारगाह हर वक़्त खुली है और उसका दरवाज़ा कभी बन्द नहीं होता।

2- वह हर एक को देखता भी है और हर एक की सुनता भी है। उसके सामने जाने और उसे पुकारने के लिए अपनी बारी और अपने नम्बर की भी ज़रूरत नहीं होती कि इन्सान को अपनी बात कहने के लिए पहले से वक़्त लेना पड़े बल्कि पूरी दुनिया एक साथ उसे पुकार सकती है और वह इतनी ताक़त रखता है कि सब की आवाज़ों को एक साथ सुन सकता है। हर एक क्या कह रहा है उसे अच्छी तरह से ख़बर रहती है।

''किसी एक आदमी की आवाज़ उसे इस तरह अपने में उलझा नहीं सकती कि वह किसी दूसरे आदमी की पुकार को न सुन सके। न ही पुकारने वालों की पुकार उसे किसी मुश्किल में डालती है कि वह समझ न पाए कि कौन सी आवाज़ किसकी है और किस की क्या ज़रूरत है। उसे गिड़गिड़ाने वालों का बार-बार गिड़गिड़ाना परेशान भी नहीं करता।''

ऐसा भी नहीं है कि उसके सामने बयान की जाने वाली हाजतें और दुआएं थोड़ी-बहुत हों कि बस कुछ ही चीज़ें उस से माँगी जा सकती हैं या कुछ ही दुआएं माँगी

जा सकती हैं और बाक़ी पर कोई रोक-टोक हो या उसके बस से बाहर हों, बल्कि इन्सान जो बात चाहे उसके सामने कह सकता है, जिस्मानी हो या रूहानी, दुनिया की हो या आख़िरत की, कोई दुख-दर्द हो या कोई ज़रूरत... सब कुछ उस से कहा जा सकता है क्योंकि वह सब कुछ सुनने वाला है।

रहमत का बहुत बड़ा ख़ज़ाना

''उसकी रहमत के ख़ज़ाने से इतना माँग सकते हो जितना कोई दूसरा किसी भी हाल में नहीं दे सकता है, चाहे वह ज़िन्दगी हो या सेहत या रिज़्क़ का ज़्यादा होना।''

इन्सान ख़ुदा से जो चाहे जितना चाहे माँग सकता है क्योंकि ख़ुदा की ज़ात की कोई हद नहीं है। इस लिए ख़ुदा ही है जो इन्सान की हद से ज़्यादा उसे दे सकता है। दुनिया में उसके अलावा कोई नहीं है जो बेहिसाब हो। इसलिए जो कुछ अल्लाह दे सकता है वह कोई दूसरा दे ही नहीं सकता और जितना वह अता कर सकता है उतना कोई दूसरा अता नहीं कर सकता।

यहाँ इमाम अली[अ०] तीन चीज़ों के बारे में ख़ास तौर पर बता रहे हैं:

1- उम्र का ज़्यादा होना: ज़िन्दगी और मौत उसी के हाथ में है, वही ज़िन्दगी को बढ़ा भी सकता है और घटा भी सकता है। इसलिए अगर कोई लम्बी उम्र चाहता है तो यह बस अल्लाह के ही हाथ में है। वैसे हदीसों में इसके बहुत से नुस्ख़े बताए गये हैं जैसे सदक़ा, रिश्तेदारों के साथ नेकी और दुआ वग़ैरा।

2- सेहत: ज़िन्दगी और लम्बी उम्र के साथ जिस्म की सेहत भी ज़रूरी है वरना लम्बी उम्र का क्या फ़ायदा। लम्बी उम्र भी इन्सान इसलिए माँगे ताकि अल्लाह की इबादत और उसके बन्दों की ख़िदमत कर सके। इस काम के लिए सेहत इसलिए ज़रूरी है ताकि इस मक़सद को पूरा कर सके। लेकिन इसके लिए सिर्फ़ दुआ काफ़ी नहीं है बल्कि हेल्थ-रिलेटेड उसूलों का ध्यान रखना या दवा-इलाज भी ज़रूरी है। साथ ही साथ पालने वाले की बारगाह में दुआ भी।

एक आलिम कहा करते थे: डॉक्टर के पास ज़रूर जाओ लेकिन इस नियत के साथ कि वह सिर्फ़ एक ज़रिया है, शिफ़ा देने वाला सिर्फ़ ख़ुदा है। दवा ज़रूर खाओ लेकिन इस इरादे के साथ कि यह बस एक ज़रिया है ख़ुदा की तरफ़ से इलाज का। डॉक्टर के पास जाते और दवा खाते वक़्त शिफ़ा बस अल्लाह से ही माँगो।

क़ुरआन करीम जनाबे इब्राहीम[अ०] की ज़बानी फ़रमाता है: ''जब मैं बीमार होता हूँ तो ख़ुदा शिफ़ा देता है।''[2]

3- रिज़्क़ में बढ़ोत्तरी: सेहत और ताक़त के सही इस्तेमाल के लिए ज़रूरत भर रिज़्क़ या रोज़ी-रोटी भी ज़रूरी है क्योंकि ग़रीबी में इन्सान बहुत से काम नहीं कर सकता इसलिए इस्लाम सही मक़सद के लिए ज़्यादा रिज़्क़ और दौलत की न सिर्फ़ हिमायत करता है बल्कि इस काम पर ज़ोर भी देता है। इस्लाम ग़रीबी को कभी अच्छा नहीं समझता बल्कि इस्लाम के हिसाब से ग़रीबी एक बहुत बुरी चीज़ है जो इन्सान को दूसरों के सामने हाथ फैलाने पर मजबूर करती है और ख़ुदा की सही इबादत करने और अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने से रोक देती है।

इन्सान ख़ुदा के ख़ज़ानों का रखवाला है

''इसके बाद अल्लाह ने दुआ की इजाज़त देकर जैसे रहमतों और नेमतों के ख़ज़ानों की चाबियाँ तुम्हारे हाथ में दे दी हैं कि तुम जब चाहो इन चाबियों से नेमत के दरवाज़े खोल सकते हो और रहमत की बारिशों को बरसा सकते हो।''

ख़ुदा के ख़ज़ाने में सब कुछ है। जिस चीज़ की भी इन्सान को ज़रूरत है वह ख़ुदा के इस ख़ज़ाने से ले सकता है। इस ख़ज़ाने की चाबियाँ भी ख़ुदा ने इन्सान को ही दे दी हैं और इन्सान इन चाबियों के ज़रिये इन दरवाज़ों को खोल कर ख़ुदा के ख़ज़ानों तक पहुँच सकता है। यह चाबी कुछ और नहीं बल्कि दुआ है जो इन्सान के पास है और इन्सान जब चाहे इसके ज़रिये ख़ुदा की नेमतों के ख़ज़ाने खोल सकता है।

इमाम अली[अ०] अपनी एक हदीस में दुआ के बारे में फ़रमाते हैं:

दुआ निजात की चाबी और कामयाबी के दरवाज़ों को खोलने का ज़रिया है और बेहतरीन दुआ वह है जो पाक सीने और तक़वा रखने वाले दिल से निकले।[3]

दुआ देर से क्यों क़ुबूल होती है ?

यहाँ एक सवाल यह भी उठता है कि अगर दुआ सारी नेमतों और हाजतों को पाने की चाबी है और ख़ुदा ने इन्सान से दुआओं को क़ुबूल करने का वादा भी किया है तो फिर बहुत सी दुआएं क़ुबूल क्यों नहीं होतीं ?या कुछ दुआएं अगर क़ुबूल होती हैं तो उन में बहुत वक़्त क्यों लग जाता है ?

दुआओं के क़ुबूल न होने या देर से क़ुबूल होने की वजह क्या है ?

इमाम अली[अ०] ने इस सवाल के जवाब में चार बातें बताई हैं:

1- पहली बात यह है कि इन्सान को दुआ के जल्दी क़ुबूल न होने की वजह से मायूस नहीं होना चाहिए बल्कि इस बात की तरफ़ ध्यान देना चाहिए कि ऐसा क्या हो रहा है कि उसकी

दुआ पूरी नहीं हो रही है। असल में दुआ का क़ुबूल होना या न होना दुआ करने वाले की नियत पर है।

इसलिए सबसे पहले यह देखना चाहिए कि दुआ पाक दिल से की जा रही है या गुनाहों से भरे नापाक दिल से ? दुआ करने वाला अपनी नियत में सच्चा है या नहीं ?

2- दूसरी बात यह है कि कभी दुआ इसलिए क़ुबूल नहीं की जाती ताकि इस रास्ते से इन्सान को ज़्यादा सवाब दिया जा सके और बन्दा अपने परवरदिगार की तरफ़ से ख़ास इनाम पाए।

हदीसों में है कि क़यामत में जब मोमिन के दाएं हाथ में ''नाम-ए-आमाल'' दिया जाएगा तो वह उसमें बहुत सी ऐसी नेकियाँ भी पाएगा जो उसने दुनिया में की ही नहीं होंगी। वह फ़रिश्तों से पूछेगा कि यह नेकियाँ उसके नाम-ए-आमाल में कहाँ से आई हैं ? उसे बताया जाएगा कि दुनिया में वह वह बहुत सी दुआएं करता था लेकिन कुछ दुआएं क़ुबूल नहीं की जाती थीं लेकिन वह मायूस नहीं होता था। यह नेकियाँ उन क़ुबूल न होने वाली दुआओं का इनाम है। यह सुनकर वह सोचेगा कि काश मेरी कोई भी दुआ क़ुबूल न होती और उन सब का अज्र मुझे यहाँ दिया जाता।

3- कभी ऐसा होता है कि इन्सान कोई ऐसी चीज़ माँगता है जो उसकी पर्सनॉलिटी के मुताबिक़ नहीं होती और ख़ुदा चूँकि उस से मोहब्बत करता है इसलिए उसकी दुआ क़ुबूल नहीं करता और उसे वह चीज़ नहीं देता बल्कि देर या सवेर उस से बेहतर कोई दूसरी चीज़ दे देता है। जैसे कोई आदमी किसी बड़े सख़ी और बड़े दिल वाले इन्सान के पास जाकर एक छोटा सा घर मांग बैठे लेकिन वह उस वक़्त उसकी डिमाण्ड पूरी न करे लेकिन कुछ वक़्त गुज़र जाने के बाद एक बेहरतीन और बड़ा सा घर उसे दे दे।

मोमिन कभी-कभी ख़ुदा से ऐसी ही चीज़ माँगता है इसलिए ख़ुदा अपने करम की वजह से वक़्त गुज़रने के बाद उसे उससे बेहतरीन चीज़ दे देता है।

4- कभी इन्सान ख़ुदा से ऐसी चीज़ भी माँग बैठता है जो उसके दीन, ईमान और आख़िरत के लिए अच्छी नहीं होती इसलिए ख़ुदा उसे वह चीज़ नहीं देता। ख़ुदा नहीं चाहता कि उसका बन्दा उस चीज़ की वजह से अपने दीन, ईमान और आख़िरत को बर्बाद कर बैठे, इसलिए वह चीज़ उसे नहीं देता, लेकिन उसे ख़ाली हाथ भी नहीं लौटाता बल्कि कोई ऐसी चीज़ उसे दे देता है जो उसकी भलाई में होती है।

क़ुरआन करीम फ़रमाता हैः

''शायद जिस चीज़ को तुम नापसन्द करते हो वही तुम्हारे लिए बेहतर हो और शायद जिस चीज़ को तुम पसन्द करते हो वही तुम्हारे लिए अच्छी न हो।''[4]

1-मफ़ातीहुल जिनान, ताक़ीबाते नमाज़ मुश्तरका, 2-सूरए शुअरा/80, 3-काफ़ी, 2/268 ह-2, 4-सूरए बक़रा/216

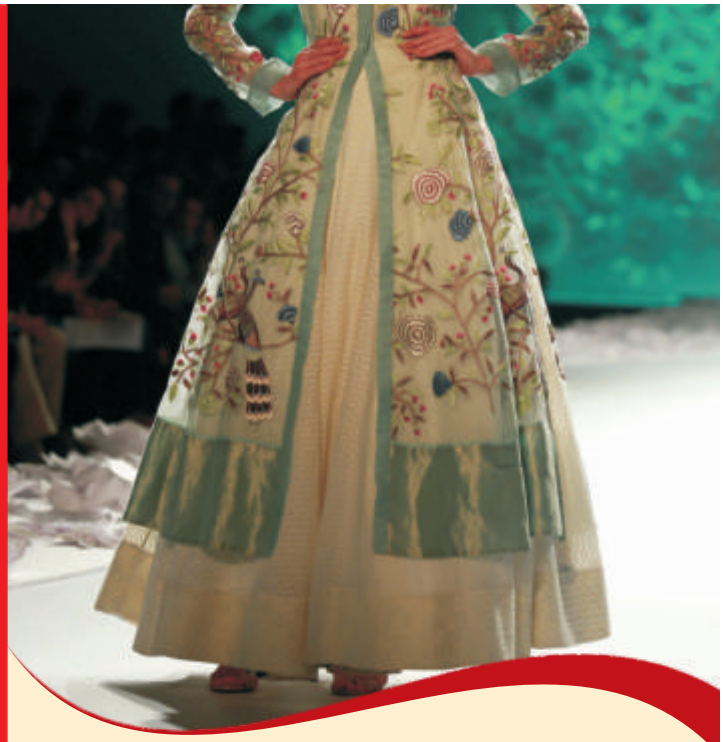

HK

KAZIM
Zari Art

All kinds of
Sarees, Suits, Lehnga
& Designer Wedding Gown

Work shop
Ahata Dhannu Beg, kazmain Road
Sa'adat ganj, Lucknow

Showroom
1st floor, Doctor Gopal Pathak Building
latouch road, Hevett road Lucknow

Contact No.
+91-9795907202, 9839126005

नमाज़

को हल्का समझने वाले

नमाज़ को हल्का समझने वाले लोग वह हैं जिनके पास वक़्त भी होता है और वह इत्मिनान के साथ अच्छे तरीक़े से नमाज़ पढ़ भी सकते हैं लेकिन ऐसा नहीं करते। ज़ोहर-अस्र की नमाज़ उस वक़्त पढ़ते हैं जब सूरज डूबने वाला होता है। जब देखते हैं कि सूरज डूबने वाला है तो भागम-भाग वुज़ू करते हैं, झटपट नमाज़ पढ़ते हैं और तेज़ी के साथ सजदागाह एक तरफ़ रखकर उठ खड़े होते हैं। ऐसी नमाज़ पढ़ते हैं जिसका न अता होता है न पता, जिसमें न इत्मिनान होता है न दिल नमाज़ में लगा होता है। यह लोग नमाज़ के साथ ऐसा बर्ताव करते हैं, जैसे नमाज़ भी दूसरे छोटे-मोटे कामों में से कोई एक काम हो।

इसे कहते हैं नमाज़ को हलका समझना। ऐसी नमाज़, उस नमाज़ से बिल्कुल अलग है जिस नमाज़ को इन्सान शौक़ के साथ पढ़ता है। नमाज़ से मोहब्बत करने वाला इन्सान ज़ोहर का वक़्त शुरू होते ही पूरे इत्मिनान के साथ वुज़ू करता है, ऐसा वुज़ू जिसमें वह वुज़ू के सारे आदाब पर ध्यान देता है।

इसके बाद जा-नमाज़ पर जाकर अज़ान व अक़ामत कहता है और सुकून व इत्मिनान के साथ नमाज़ पढ़ता है। सलाम कह कर फ़ौरन ही खड़ा नहीं हो जाता बल्कि दिल लगा कर कुछ देर तस्बीह और नमाज़ के बाद की दुआएं भी पढ़ता है यानी ख़ुदा का ज़िक्र भी करता है। यह इस बात की निशानी है कि वह नमाज़ का एहतेराम भी करता है और उसकी नज़र में नमाज़ की अहमियत भी है।

ऐसे नमाज़ी जो नमाज़ को छोटा समझते हैं, वह सुबह की नमाज़ सूरज निकलने के वक़्त पढ़ते हैं और ज़ोहर व अस्र की नमाज़ सूरज डूबने के वक़्त, मग़रिब और इशा की नमाज़ उन्हें रात के चार घंटे गुज़र जाने के बाद याद आती है। यह लोग बिजली की स्पीड के साथ नमाज़ पढ़ते हैं और तजुर्बा बताता है कि ऐसे लोगों के बच्चे सिरे से नमाज़ पढ़ते ही नहीं हैं।

अगर हम सच्चे नमाज़ी बनना चाहते हैं और चाहते हैं कि हमारे बच्चे भी नमाज़ के पाबन्द बनें तो हमें नमाज़ का एहतेराम करना ही पड़ेगा।

हम आपसे सिर्फ़ यह नहीं चाहते कि नमाज़ पढ़िये बल्कि इस से भी बढ़ कर हम यह चाहते हैं कि नमाज़ का एहतेराम कीजिए। नमाज़ का एहतेराम इस तरह से होगा कि पहले तो ख़ुद अपने लिए अपने घर में नमाज़ पढ़ने के लिए एक ख़ास जगह बनाईये (और ऐसा करना मुस्तहब भी है) यानी घर में एक ऐसी जगह ख़ास रखिये जो आपकी इबादत के लिए हो। जैसे अल्लाह के रसूल[स०] ने नमाज़ के लिए एक ख़ास जगह तय कर रखी थी। अगर हो सके तो आप भी अपने घर के किसी कमरे को या किसी ख़ास जगह को नमाज़ पढ़ने की जगह के लिए तय कर लीजिए। अगर घर में कोई ख़ाली कमरा न हो तो ख़ुद अपने कमरे में ही नमाज़ के लिए एक जगह चुन लीजिए। एक पाक-साफ़ जा-नमाज़ वहाँ रखिये, नमाज़ के लिए खड़े होने से पहले उसे बिछाईये, आपके पास एक मिस्वाक भी हो, ज़िक्र पढ़ने के लिए तस्बीह भी हो।

जब वुज़ू करें तो वुज़ू भी जल्दी-जल्दी मत कीजिए। हम सब दावा करते हैं कि हम हज़रत अली[अ०] के शिया हैं लेकिन सिर्फ़ नाम रख लेने से कोई अली[अ०] का शिया नहीं हो जाता (इसके लिए हज़रत अली[अ०] के सिखाए हुए रास्ते पर

■ शहीद मुर्तज़ा मुतह्हरी

चलना भी ज़रूरी है)।

हज़रत अली[अ०] के एक साथी कहते हैं: हज़रत अली[अ०] जब वुज़ू के लिए अपने हाथ धोते थे (वुज़ू का पहला मुस्तहब काम यह है कि इन्सान अपने दोनों हाथ धोए) तो यूँ कहते थे:

بِسُمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِى مِنَ التَّوّٰابِيُنَ
وَاجُعَلُنى مِنَ الُمُطَهّرِيُنَ.

अल्लाह के नाम से और अल्लाह ही के सहारे से। ख़ुदाया! मुझे तौबा करने वालों में और पाकीज़ा रहने वालों में से क़रार दे।

तौबा का मतलब ख़ुद को पाक करना होता है। पानी पाक होने की निशानी है। यही वजह है कि जब हज़रत अली[अ०] पानी के सामने जाते थे तो तौबा को याद करके, अपने हाथों को साफ़ करते हुए, अपनी रूह की पाकीज़गी की तरफ़ ध्यान देते हुए हम से कहते हैं कि जब इस पानी का सामना करो जिसे ख़ुदा ने पाक होने का ज़रिया बनाया है, जब उसकी तरफ़ जाओ और तुम्हारी नज़रें उस पर पड़ें और जब अपने हाथ इस से धोओ या पाक करो तो यह बात ज़हन में रखो कि एक और पाकीगज़्गी भी है, एक और पानी भी है। वह पाकीज़गी रूह की पाकीज़गी है और वह पानी, तौबा का पानी है।

कहते हैं कि हाथों को धोने के बाद अली[अ०] अपने चेहरे पर पानी डालते हुए कहते थे:

اَللّٰهُمَّ بَيّضْ وَجُهِى يَوُمَ تَسُوَدُّ فيه الُوُجُوهُ
وَلَا تُسَوِّدُ وَجُهِى يَوُمَ تَبُيَضُّ فِيهِ الُوُجُوهُ

हम जब अपना चेहरा धोते हैं और साफ़ करते हैं तो वह चमकने लगता है लेकिन हज़रत अली[अ०] इसी को काफ़ी नहीं समझते और इस्लाम भी इसे काफ़ी नहीं समझता। अपनी जगह यह भी सही है और इस पर अमल भी करना चाहिए लेकिन एक और पाकीज़गी के साथ और एक और नूर के साथ, चेहरे पर एक और चमक होना चाहिए।

اَللّٰهُمَّ بَيِّضْ وَجُهِى يَوُمَ تَسُوَدُّ فيه الُوُجُوهُ
وَلَا تُسَوِّدُ وَجُهِى يَوُمَ تَبُيَضُّ فِيهِ الُوُجُوهُ.

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं:

ख़ुदाया! मेरे चेहरे को उस दिन रौशन कर देना जिस दिन चेहरे काले हो जाएंगे और उस दिन मेरे चेहरे को काला न करना जिस दिन चेहरे रौशन हो जाएंगे।

इसके बाद दाएं हाथ पर पानी डाल करे फ़रमाते थे:

اَللّٰهُمَّ اَعُطِنى كِتابى بِيَمِينى وَالُخُلُدَ فِى
الُجِنَانِ بِيَسَارِى وَحَاسِبُنِى حِسَاباً يسراً.

ख़ुदाया! क़यामत में मेरा नाम-ए-आमाल मेरे दाहिने हाथ में देना और जन्नत मुझे आसानी से इनायत फ़रमा देना, और हिसाब में भी आसानी फ़रमाना।

इस तरह आप आख़िरत के हिसाब को याद करते हुए और अपने बाएं हाथ पर पानी डालते हुए फ़रमाते थे:

اَللّٰهُمَّ لاٰ تَعُطِنى كِتابى بِشِمالِى وَلاٰ مِنُ وَراءِ ظَهُرِى
وَلَا تَجُعَلُهَا مَغلولَةً اِلٰى عُنُقِى
وَاَعُوذُبِكَ مِنُ مُقَطِّعٰاتِ النِّيرانِ.

ख़ुदाया! मेरा नाम-ए-आमाल मेरे बाएं हाथ में या पीठ की तरफ़ से न देना और न मेरे हाथों को मेरी गर्दन से बाँध देना। जहन्नम की आग के शोलों से मैं तेरी पनाह चाहता हूँ।

इसके बाद आपने सर का मसह करते हुए फ़रमाते थे:

اَللّٰهُمَّ غَشِّنى بِرَحْمَتِكَ وَبَرَكَاتِكَ

ख़ुदाया! मुझे अपनी रहमत और बरकतों से ढाँप ले।

फिर आपने पैर का मसह करते हुए फ़रमाते थे:

اَللّٰهُمَّ ثَبِّتُ قَدَمى عَلىٰ الصِراطِ
يَوُمَ يَزِلُّ فيهِ الُاَقُدَامُ

ख़ुदाया! मेरे इन पैरों को पुले सिरात पर उस दिन साबित रखना जिस दिन सारे क़दम लड़खड़ा रहे होंगे।

وَاجُعَلُ سَعُيِى فيما يُرُضِكَ عَنّى

मेरे अमल और कोशिश को उन कामों के साथ रखना जो तुझे ख़ुश कर सकें।

ऐसा वुज़ू जो इतने शौक़, मोहब्बत और तवज्जो के साथ किया जाएगा, वह एक अलग ही वुज़ू होगा और उसे एक अलग ही अन्दाज़ से क़ुबूल किया जाएगा।

एक्स्ट्रा शीट

■ सहर शाह

स्टूडेंट लाइफ़ के दौरान एग्ज़ाम में हर एक को कभी न कभी एक्स्ट्रा शीट लेना ही पड़ती है। यह शीट या तो कुछ सवालों के जवाब लम्बा होने की वजह से ली जाती है या फिर कुछ स्टूडेंट अपनी पसंद के कुछ एक्स्ट्रा सवालों के जवाब देने के लिए लेते हैं ताकि नम्बर्स में कोई कमी रह जाए तो यहाँ से पूरी हो जाए। एक्स्ट्रा शीट लेने वाले स्टूडेंन्ट्स को अकसर बहुत लायक़ और पढ़ाकू टाइप का समझ कर दूसरे स्टूडेन्ट्स उनके कामयाब होने का प्रेडिक्शन भी कर देते हैं। लेकिन होता यह है कि पेपर चेक करने वाले सिर्फ़ ज़रूरी सवालों को ही चेक करते हैं और एक्स्ट्रा सवालों की तरफ़ कोई ध्यान नहीं देते। इसका नतीजा यह होता कि रिज़ल्ट हमेशा प्रेडिक्शन के उलट आता है या वह नहीं आ पाता जिसकी उम्मीद की जाती है। एग्ज़ाम के वक़्त जब तक पेपर आपके पास होता है, आपकी कामयाबी या नाकामी आपके हाथों में होती है। पेपर आपके हाथ से निकल जाए तो फिर बाद में लाख अफ़सोस करने पर भी रिज़ल्ट कार्ड पर ''Fail'' को ''Pass'' में नहीं बदला जा सकता। तब सिर्फ़ एक एहसास बाक़ी रह जाता है कि काश सिर्फ़ ज़रूरी सवालों का ही सही ढंग से जवाब दिया होता।

अब ज़रा इस असली एग्ज़ाम-घर में ख़ुद को रख कर सोचिए। यह अकेला एग्ज़ाम है जिसके सभी ज़रूरी सवाल और उनके जवाब बिल्कुल परफ़ेक्ट सोर्स से हम तक पहुँचा दिये गये हैं लेकिन हम ज़रूरी सवालों को छोड़कर ''एक्स्ट्रा शीट्स'' भरने में लगे हुए हैं। दूसरी तरह से इस बात को यूँ कहिए कि ''वाजिब'' को छोड़ कर ''मुस्तहब'' के ज़रिये आख़िरत की कामयाबी पाना चाहते हैं।

ईमान के बाद नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात और दूसरे बहुत से बुनियादी वाजिब हैं। क़यामत में सबसे पहले तो नमाज़ ही का सवाल किया जाएगा। जिसकी नमाज़ सही निकली, उसके लिए फिर बाक़ी चीज़ें शायद आसान कर दी जाएं। हम पाँच वक़्त की ''वाजिब'' इबादत को छोड़कर सिर्फ़ कुछ ख़ास रातों की ''मुस्तहब'' इबादत को निजात का ज़रिया मान बैठे हैं। हमारे एग्ज़ाम पेपर का वह ज़रूरी सवाल जिसका जवाब बहुत ज़रूरी है वह वाजिब नमाज़ों को सही तरीक़े से पूरी-पूरी शर्तों के साथ ''क़ायम'' करना है। ''मुस्तहब इबादतें'' हमारे स्टेटस को बढ़ाने के लिए होती हैं, जबकि ''वाजिब इबादतों'' पर हमारी निजात टिकी हुई है। जब हमारे पास जन्नत की चाबी ही नहीं होगी तो स्टेटस के बढ़ने का सवाल ही पैदा नहीं होता।

आज नमाज़ी भी हमें बहुत नज़र आते हैं लेकिन सूरए वाक़िआ में ख़ुदा ने कह दिया है कि पिछलों में से बहुत कम लोग जन्नत के बड़े स्टेटस तक पहुँच सकेंगे। इसलिए अगर हमारी नमाज़ें क़ुबूल हो भी

गई हों तो उनमें जो कमी है उसकी वजह से हमें बहुत बड़ा स्टेटस तो मिलने से रहा। क़ुरआन में हमें नमाज़ ''पढ़ने'' के बजाए ''क़ायम'' करने का हुक्म मिला है वह भी बग़ैर सुस्ती के और सही वक़्त पर सारी शर्तों के साथ..... जबकि हम में से अकसर लोगों को तो नमाज़ ''पढ़ने'' की बस आदत है।

यही मामला दूसरे वाजिब कामों का भी है। हम जैसे-तैसे उन्हें भी बस पूरा करते हैं। रोज़े रखते हैं लेकिन बग़ैर उसकी रूह को महसूस किए। जिस तक़वे को पाने के लिए अल्लाह ने यह इबादत वाजिब की है, वह तो हमारे लिए पूरे माहे रमज़ान में बस एक टम्प्रेरी हालत थी जो ईद का एलान सुनते ही भाप बन कर उड़ गई। हज और ज़कात वग़ैरा का हाल भी नमाज़ रोज़े जैसा ही है।

अल्लाह की तरफ़ से दुनिया में लिये जाने वाले इस एग्ज़ाम में वाजिब इबादतों के अलावा अख़लाक़ी वैल्यूज़ का सवाल भी बहुत ज़रूरी है। अगर इसकी अहमियत को समझना हो तो बस उन हदीसों को सामने रख लीजिए जिनके मुताबिक़ क़यामत के दिन नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज जैसी इबादतों को साथ लाने वाले इन्सान को सिर्फ़ इस वजह से जहन्नम की आग में डाल दिया जाएगा कि उसने दूसरे लोगों के साथ अपने अख़्लाक़ी रिलेशन्स में लापरवाही बरती होगी, किसी का जायज़ हक़ मारा होगा, किसी को गाली दी होगी, किसी की ग़ीबत की होगी, किसी की चुग़ली करके लड़ाई करवाई होगी, किसी का दिल दुखाया होगा... उसने अपने पेपर का इबादतों वाला हिस्सा तो भर लिया होगा लेकिन अख़लाक़ वाले हिस्से में अपनी मर्ज़ी से ग़लत जवाब लिख दिये होंगे।

इंसाफ़ पर चलते हुए ऐसे आदमी की अच्छाईयाँ दूसरों में बाँट दी जाएंगी और उनके गुनाहों का बोझ उस पर लाद दिया जाएगा।

अल्लाह के रसूल[स०] की हदीस के मुताबिक़ क़यामत में उनकी उम्मत में से ऐसा हर आदमी ख़ाली हाथ होगा।

हमारे एग्ज़ाम का सही जवाब यह है कि हमें वैसा इन्सान बनना है जैसा क़ुरआन चाहता है। ऐसा बनने के लिए क़ुरआन ने आइडियल भी हमारे सामने रख दिया है और वह हैं अल्लाह के रसूल हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा[स०]। क़ुरआन करीम ने हमें यह भी बता दिया है कि यह एक ऐसा आइडियल है जो क़यामत तक आने वाले हर इंसान के काम आएगा।

जन्नत इतनी सस्ती और छोटी चीज़ तो है नहीं कि अल्लाह सिर्फ़ हमारे सोचने और चाहने से ही हमेशा-हमेशा के लिए हमें दे देगा।

जन्नत पाने के लिए एग्ज़ाम पास करना ज़रूरी है। पेपर एक ही है मगर इसके दो हिस्से हैं:

पहला हिस्सा ईमान और इबादत का है। दूसरा हिस्सा अख़्लाक़ का है।

अगर हम ने हर सवाल का जवाब सही-सही दिया तभी हम निजात की उम्मीद कर सकते हैं वरना निजात मिल पाना मुश्किल है।

इसलिए ज़रूरी सवालों का जवाब पहले दीजिए और ख़ुद को पहले पासिंग मार्क्स लेने के क़ाबिल बनाईये।

इसके बाद जितनी चाहें, छोटी-बड़ी अनगिनत नेकियाँ करते जाईये और अपना स्टेटस बढ़ाते जाईये। या दूसरे लफ़्ज़ों में अपना नाम ग्रेड ए-प्लस में लिखवाने के लिए अपनी ''एक्स्ट्रा शीट्स'' भरते जाईये क्योंकि अल्लाह तो बेहिसाब देने वाला है। उसके यहाँ तो इन्सान का एक छोटा सा काम भी बर्बाद नहीं जाता।

पेपर अभी हाथ में है। ज़िन्दगी कब तक के लिए मिली है, इसका कुछ पता नहीं है। इसलिए जो वाजिब और ज़रूरी है उसकी तरफ़ पूरा ध्यान दीजिए। मुस्तहब बाद में कीजिएगा। ●

मन्न व सलवा

अलहाज आलिम हुसैन रिज़वी
रिटायर्ड ए.जी.एम., यूनियन बैंक
(9450543234)

शायद आपने क़ुरआने मजीद में ''मन्न व सलवा'' के बारे में पढ़ा होगा या उलमा से सुना होगा। अगर नहीं, तो कोई बात नहीं। आज हम आपको मन्न व सलमा के बारे में बता रहे हैंः

जब मिस्र में यहूदियों (बनी इस्राईल) पर उनके बादशाह फ़िरऔन का जुल्म बहुत बढ़ गया तो अल्लाह के हुक्म से हज़रत मूसा[अ०] ने मिस्र को छोड़ देने का इरादा किया। रास्ते में नील दरिया पड़ता था जो आगे बढ़ने में एक बहुत बड़ी रुकावट थी मगर अल्लाह ने पानी के बीच रास्ता बना दिया था। अभी यह लोग बीच दरिया में ही पहुँचे थे कि फ़िरऔन पीछा करता हुआ अपने लश्कर के साथ नील के किनारे पर आ पहुँचा। उसने जो दरिया में रास्ता देखा तो वह भी दरिया में उतर गया। लेकिन इधर हज़रत मूसा और उनके साथियों ने दरिया पार किया उधर दरिया का पानी आपस में मिल गया, फ़िरऔन और उसके साथी दरिया में डूब गये।

दरिया के पार होकर हज़रत मूसा अपनी क़ौम को फ़िरऔन के चंगुल से छुड़ा कर सीना के इलाक़े में ले आए ताकि उन्हें किनआन पहुँचाया जा सके। यह बात ईसा पूर्व 1451 की है। सीना डिज़र्ट बहुत बड़ा था और यहूदी भूखे प्यासे भटक रहे थे। अल्लाह ने उनकी प्यास बुझाने के लिए पानी का इन्तेज़ाम किया और चूँकि वहाँ खाने के लिए कुछ भी नहीं था इसलिए खाने में ''मन्न व सलवा'' भेजा जिसके बारे में क़ुरआन की यह आयतें हमें बता रही हैंः-

''हम ने (बनी इस्राईल की) इस क़ौम को (हज़रत याक़ूब की बारह औलाद को) बारह हिस्सों में बाँट दिया और जब उन्होंने पानी माँगा तो हम ने मूसा की तरफ़ 'वही' की कि ज़मीन पर अपना असा (लाठी) मारो। उन्होंने असा मारा तो बारह चश्मे जारी हो गए और हर ग्रुप को अपने पानी की जगह का पता चल गया। और हम ने उनके सरों पर बादलों का साया किया और उन पर मन्न व सलवा का इन्तेज़ाम (नाज़िल) किया ताकि हमारा दिया हुआ पाकीज़ा रिज़्क़ (खाने का सामान) खाएं मगर इन लोगों ने मुख़ालिफ़त करके हमारे ऊपर जुल्म नहीं किया बल्कि यह अपने ही ऊपर जुल्म करने लगे।''[1]

इसी बात को क़ुरआन ने फिर दोहराया और यूँ कहाः

''हम ने तुम्हारे सरों पर बादलों का साया किया। तुम्हारे लिए मन्न व सलवा भेजा ताकि तुम इत्मिनान से पाकीज़ा रिज़्क़ खाओ। इन लोगों ने हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा बल्कि ख़ुद अपने ऊपर जुल्म किया।''[2]

क़ुरआन ने यहूदियों को फिर से तीसरी बार मन्न व सलवा की याद दिलाई और कहाः

''ऐ बनी इस्राईल! हम ने तुम को तुम्हारे दुश्मन से बचाया और तूर पहाड़ की दाहिनी तरफ़ (तौरेत के लिए) वादा किया और मन्न व सलवा भेजा।''[3]

ऊपर लिखी तीन आयतों से बनी इस्राईल पर अल्लाह के करम का पता चलता है। पहला तो यह कि चूँकि सीना डिज़र्ट में पानी नहीं मिल सकता था इसलिए अल्लाह ने अपनी लाठी के ज़रिए बारह चश्मे जारी कर दिए। दूसरा यह कि चूँकि सीना का इलाक़ा एक चटियल मैदान था और वहाँ किसी साए की गुन्जाइश नहीं थी इसलिए अल्लाह ने बादलों को भेज कर साए का इन्तेज़ाम किया। तीसरा और सबसे बड़ा करम यह किया कि इन लाखों लोगों की भूख मिटाने के लिए मन्न व सलवा भी भेजा।

इस तीसरे वाले करम और तीसरी वाली नेमत पर बात करने के लिए पहले हम ''सलवा'' को लेते हैं। सलवा को हिन्दी में बटेर कहते हैं यानी उनके खाने का एक हिस्सा बटेर को बनाया। अल्लाह की क़ुदरत से उस इलाक़े में बटेरों के झुंड के झुंड आने लगे थे और बनी इस्राईल इन्हें आराम से खा रहे थे।

अल्लाह ने खाने के लिए दूसरा इन्तेज़ाम ''मन्न'' का किया।

मन्न को इंग्लिश, रोमन, इटेलियन, मलयाल

म और रूसी में Manna, फ्रेंच में Manne, फ़ारसी व उर्दू में तुरंजबीन और तमिल, हिन्दी व तेलगू में मीना कहते हैं।

अब हम मन्न पर साइंसी रिसर्च पेश करने से पहले देखेंगे कि बाइबिल इस बारे में क्या कहती है:

1- किताबे ख़ुरूज,
चेप्टर/16, आयत/15:

''जब वह ओस सूख गई तो क्या देखते हैं कि मैदान में एक छोटी-छोटी गोल चीज़, ऐसी छोटी जैसे कि पाले के दाने होते हैं, ज़मीन पर पड़ी हैं। बनी इस्राईल उसे देख कर कहने लगे कि 'मन्न' यानी यह क्या है क्योंकि वह नहीं जानते थे कि वह क्या है। तब मूसा ने उन से कहा कि यह वही रोटी है जो अल्लाह ने तुम्हें खाने के लिए दी है।''

2- किताबे इस्तस्ना, चेप्टर/8, आयत/3:

''उसने तुझे पहले परेशानी में डाला और फिर तुझे भूखा होने दिया। फिर वह मन्न, जिसे तेरे बाप-दादा भी नहीं जानते थे, तुझे खिलाया ताकि तुझ को सिखाए कि इन्सान सिर्फ़ रोटी पर ही ज़िन्दा नहीं रहता बल्कि हर बात से जो ख़ुदावन्द के मुँह से निकलती है, वह जीता रहता है।

3- किताबे गिनती,
चेप्टर/11, आयत/7-9:

''मन्न धनिये की तरह था और ऐसे नज़र आता था जैसे मोती और रात को जब ओस पड़ती थी तो उसके साथ मन्न भी गिरता था।''

मन्न का मतलब इनाम या एहसान होता है लेकिन जिस बारे में मन्न इस्तेमाल किया गया है उसके बारे में कहा गया है कि यह एक शहद जैसा ओस वाला गोंद था जिसे अल्लाह सीना के इलाक़े में भटकने वाले बनी इस्राईल के लिए खाने के तौर पर नाज़िल करता था। यह गोंद वहाँ के पेड़ों के पत्तों पर इकट्ठा हो जाता था और बनी इस्राईल रोज़ इसे खा लिया करते थे।

लेकिन बाइबिल की आयतों की तफ़सीर करने वाले रिसर्च स्कॉलर मोल्डंके (Moldenke) ने कहा है कि 'मन्न' सिर्फ़ मीठा गोंद ही नहीं था बल्कि कुछ ख़ास तरह के लाइकेन (Lichen) और अल्गी (Algae) को भी मन्न कहा गया था। उनकी नज़र में बाइबिल की किताबे बुरूज में जिस 'मन्न' का नाम लिया गया है वह तो सचमुच मीठी चीज़ थी लेकिन किताबे ख़ुरूज और किताबे गिनती में जिस 'मन्न' के बारे में कहा गया है कि वह आसमान से बरसती थी, वह कोई मीठी चीज़ नहीं थी बल्कि एक ख़ास तरह की काई थी जिसको साइंस में Lichen कहते हैं। वह सूख कर ज़मीन से अलग हो जाती थी और तेज़ हवाओं की मदद से उड़ती हुई दूर-दूर तक जाकर गिरती थी। बनी इस्राईल इस काई को इकटठा कर लेते थे और पीस कर इसकी रोटियाँ या फुल्के पका कर खाते थे। साथ में नमकीन के तौर पर सलवा (बटेर) भून कर खाते थे। उन्होंने तीसरी क़िस्म अल्गी (Algae) के बारे में लिखा है कि यह रात में ओस के साथ ज़मीन पर दिखाई पड़ती थी और सुबह को इकट्ठा कर ली जाती थी। जो बच जाती थी वह सूरज की गर्मी से पिघल कर ख़त्म हो जाती थी। मतलब यह कि बनी इस्राईल 'मन्न' के साथ बटेरों का गोश्त भी भून कर खाते थे क्योंकि वह इलाक़ा बटेरों के लिए मशहूर था।

अब हम 'मन्न' के बारे में मुस्लिम स्कॉलर्स का नज़रिया देखते हैं। किताब मौज़ुल क़ुरआन में है कि जब बनी इस्राइल फ़िरऔन से जान छुड़ाकर सीना के मैदान में पहुँचे तो उनके पास खाने के लिए कुछ भी नहीं था। उस वक़्त अल्लाह ने 'मन्न' भेजा जो धनिये की तरह की एक मीठी चीज़ थी और सलवा (बटेर) भी भेजा जिसे वह लोग पकड़ लेते थे और उसके कबाब बनाकर खाते थे।

मौलाना आज़ाद के ख़याल में मन्न पेड़ का शीरा था जो गोंद की तरह जम जाया करता था और ज़ायके में बड़ा अच्छा होता थाा।

शिया उलमा ने उसे तुरंजबीन माना है।

मुसलमान स्कॉलर्स में सबसे पहली राय, अबू रेहान इब्ने अल-बीरूनी (973ई. -1050ई.) ने दी है कि 'हाज' नाम के पौधे से निकाली गई गोंद, जिसे तुरंजबीन का नाम दिया गया है, वही असली 'मन्न' कहा जा सकता है। तुरंजबीन, तुरंगबीन (फ़ारसी) का बिगड़ा हुआ रूप है। अंगबीन फ़ारसी में शहद को कहते हैं जिसे अंग्रेज़ी में Honey Dew (ओस वाला शहद) कहा जाता है।

अल-बीरूनी के बाद कोई रिसर्च इस बारे में नहीं हुई लेकिन बर्खार्ड नामी साइंसटिस्ट (जो बाद में मिस्र में शेख़ बरकात के नाम से मशहूर हुए) ने 1822ई. में अपनी किताब Travels in Syria & Holy Land में लिखा है कि 'मन्न' की पैदावार कुछ ख़ास तरह के कीड़ों की वजह से होती है जो कुछ पेड़ों की छाल में छेद कर देते हैं और उन से कड़ी गर्मी के मौसम में एक लार या राल सी निकलती है जो रात की ठंडक में पेड़ों पर जम जाती है। यही मन्न कहलाती है।

यही बात 1829ई. में अहरनबर्ग और हैमप्रेश नामी दो साइंसटिस्टों ने भी कही है कि Cocus Manniparus नाम का कीड़ा सीना के टमारिक्स (Tamarix) यानी झाऊ नामी पौधों पर पाया गया है जिसकी वजह से 'मन्न' पैदा होता था।

इसका मतलब यह हुआ कि उन्नीस्वीं सदी के आधे से पहले ही यह बात साफ़ हो गई थी कि सीना के पेड़ों पर मन्न पैदा होता है जो बहुत मीठा होता है। इसके कुछ बाद ही इस बात की जानकारी भी हुई कि इस इलाक़े में बसने वाले लोग इन पौधों से निकले हुए गोंद (मन्न) को मिठाई के तौर पर खाते हैं।

आज तक हुई रिसर्च से यह बात मानी जा सकती है कि जिस 'मन्न' का ज़िक्र क़ुरआन में है, वह दो तरह के पौधों से हासिल होता है। एक तो वह है जिसे अरबी में 'अलहाज' कहते हैं जिसका साइंसी नाम Alhagi Mauro rum है। इन पौधों से मिलने वाला 'मन्न' तुरंजबीन कहलाता है और जिसे

वहाँ से एक्सपोर्ट किया जाता है। दूसरा पौधा जो हज़रत मूसा[अ०] के ज़माने में सीना में बहुत ज़्यादा मिलता था और जो अब भी वहाँ पैदा होता है वह 'तुरफ़ा' नामी पौधा है जिसका साइंसी नाम Tamarix Mannifera है और इस से भी 'मन्न' निकलता था। हाज और तुरफ़ा से निकलने वाले 'मन्न' का बिज़नेस आज के दौर में भी किसी हद तक होता है।

अब अगर क़ुरआनी लफ़्ज़ 'नाज़िल किया गया' का मतलब 'आसमान से उतरा' के बजाए 'इन्तेज़ाम किया गया' लिया जाए तो सारी बात आसान हो जाती है कि अल्लाह ने बनी इस्राईल के लिए मीठे के तौर पर हाज और तुरफ़ा नामी पेड़ों से मीठा गोंद दिया और नमकीन खाने के लिए बटेर का गोश्त भेजा जो हर तरह से एक बेहतरीन ग़िज़ा थी वर्ना सिर्फ़ मीठी चीज़ खाकर लोग सालों साल तक तन्दुरुस्ती भरी ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकते थे।

आख़िर में हम यह कह सकते हैं कि सीना (सिनाई) के मैदान में बनी इस्राईल को जो मीठा गोंद और बटेर का गोश्त अल्लाह ने दिया था उसी का ज़िक्र क़ुरआन में ''मन्न व सलवा'' के नाम से किया गया है।

अब असल बात क्या है यह अल्लाह ही जानता है।

1-सूरए आराफ़/160, 2-सूरए बक़रा/57, 3-सूरए ताहा/80

(रिफ़्रेंसः किताब नबाताते क़ुरआन, डॉ. इक़्तेदार हुसैन)

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ

इस माहे रमज़ान में एक दर्दनाक ख़बर यह भी मिली कि हिन्दुस्तान के एक बुज़ुर्ग आलिमे दीन हुज्जतुल इस्लाम मौलाना हसन अब्बास फ़ितरत हमारे बीच से उठ गए और अपने पालने वाले के पास पहुँच गए।

मरहूम का इंतेक़ाल हमारे पूरे शिया समाज के लिए एक बहुत बड़ा नुक़सान है क्योंकि मरहूम ने लगभग पौन सदी तक अपनी ज़बान और अपने क़लम से दीन और समाज के लिए बड़ी अनथक कोशिशें की थीं।

वीकली सदाक़त और बिलिट्ज़ जैसे मशहूर अख़बारों में आपके आर्टिकिल्स बराबर छपते आए थे और रीटर्स आपके आर्टिकिल्स को बड़े शौक़ से पढ़ते थे।

इंक़ेलाबे इस्लामी के शुरू से ही राहे इस्लाम और निदाए इस्लाम जैसी मैग्ज़ीन्स में भी आपके आर्टिकिल बराबर छपते रहे थे जिनमें आपने इस्लाम दुश्मन ताक़तों के चेहरों से पर्दा हटाते हुए नई नौजवान नस्ल के सामने इंक़ेलाबे इस्लामी को पहचनवाने में एक बहुत बड़ा रोल निभाया था।

अल्लाह तआला से दुआ है कि मरहूम को अइम्म-ए-मासूम[अ०] के साथ महशूर फ़रमाए!

औरत ही वह हस्ती है जो घर के अंदर सुकून और आराम की रौशनी फैलाती है।
अपने शौहर और अपने बच्चों का सुकून व आराम पहुँचाती है।
अगर खुद औरत ही के पास ज़ेहनी और रूहानी सुकून न हो
तो वह अपनी फ़ैमिली को भी आराम नहीं पहुँचा सकती।

(सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह ख़ामेनई)

■ ऐमन तारिक़

एक ख़त ख़ुदा के नाम

ऐ ख़ुदा! तारीफ़ बस तेरे लिए है और तस्बीह भी बस तेरे ही लिए है। तू रहमान भी है और रहीम भी। तू सत्तर माँओं से बढ़कर मोहब्बत करने वाला है।

तू हमारी जान से भी ज़्यादा हम से क़रीब है। तू ही पैदा करने वाला है। तू ही हमें इस दुनिया में भेजने वाला है। तू ही हमें वापस बुलाने की ताक़त रखता है। तू ही इस सारी दुनिया का मालिक है। हर मुल्क तेरा और हर क़ौम तेरी है। तू ही नेमतें देने वाला और नेमतों के ग़लत इस्तेमाल पर उन्हें वापस लेने वाला है।

ऐ ख़ुदा! यूँ तो रोज़ तुझ से बातें होती हैं लेकिन आज मैं एक बहुत ख़ास बात करना चाहती हूँ।

बहुत परेशानी में तेरे पास आई हूँ। डरी हुई भी हूँ क्योंकि ऐसा लग रहा है कि तू हम सब से नाराज़ है।

ऐसा नहीं कि मैं तेरी नाराज़गी की वजह नहीं जानती लेकिन फिर भी अंजान बनना चाहती हूँ क्योंकि अगर कमियों और ग़लतियों पर नज़र डालूँ तो शायद तुझ से बात करने की और मुनाजात करने की भी हिम्मत न कर सकूँ।

हम तेरी मस्जिदों की तरफ़ से मुँह फेरे हुए थे आज उनके दरवाज़े हम पर बन्द हैं।

तेरी किताब हमारे घरों में मौजूद थी लेकिन उसके मुताबिक़ तेरी मर्ज़ी के हिसाब से अपनी ज़िन्दगी बिताने में हम सुस्ती करते थे।

हम तेरी बनाई हुई इस दुनिया को गन्दा कर रहे थे, आज हम अपने घरों में बन्द हैं और दुनिया हम से महफ़ूज़ होकर सुख की साँस ले रही है।

हम तेरे दिये हुए रिज़्क़ को बर्बाद करते थे आज हम रिज़्क़ पाने के लिए बेचैन हैं।

हम एक-दूसरे का हक़ मारते थे और आज एक दूसरे की शक्लें देखने को तड़प रहे हैं।

तेरे बेबस व बेकस बन्दों के लिए आवाज़ उठाने में सुस्ती दिखाते थे और आज ख़ुद ही अकेलेपन, क़ैद और तकलीफ़ की हालत में हैं।

माल ख़र्च करते हुए हमारी जान जाती थी और आज हम बेकार हैं।

हमारी जॉब और बिज़नेस डूबते नज़र आ रहे हैं।

मालिक! हमारे जुर्म तो बहुत हैं, इतने कि हम गिनते जाएं और ख़त्म ही न हों।

ऐ ख़ुदा! दुनिया का हर इन्सान डरा हुआ है। एक नज़र न आने वाले दुश्मन का डर हमें सताए जा रहा है। ऐसा डर कि जिस से हमारे दिमाग़ ने काम करना बन्द कर दिया है।

हमारी सोचने-समझने की सलाहियत कहीं खो गई है।

ऐ ख़ुदा! तूने हमें ईमान की दौलत दी थी और अपना बंदा बनाया था।

यह यक़ीन है कि हमें ज़िन्दगी के ख़त्म होने के बाद तेरे पास ही आना है, हमें मौत से नहीं डराता लेकिन ऐ मालिक! इस हालत में इस दुनिया को छोड़ने से बहुत डर लगता है। अपनी आँखों से मौत और ज़िन्दगी की यह आँख मिचोली देखने से दिल डूबा जाता है।

हमें क़यामत के दिन पर ईमान तो था लेकिन यह दुनिया हमें इतनी अच्छी लगने लगी थी कि बार-बार क़यामत का दिन भुला देती थी। अब ऐसा लग रहा है कि जैसे कुछ वक़्त के लिए तूने क़यामत की एक झलक हमें दुनिया में ही दिखा दी है।

आज हर आदमी एक-दूसरे से भाग रहा है और सगे रिश्तेदार एक-दूसरे से डर रहे हैं। हर एक को बस अपनी पड़ी है।

ऐ ख़ुदा! यह न कहना कि मुसीबत पड़ने पर ही मेरी तरफ़ क्यों आए? क्योंकि तेरे अलावा इस दुनिया के इन्सानों को बचाने वाला कोई नहीं है।

वह जो बड़े-बड़े तेरा इनकार करते थे वह सब आज हिम्मत हार चुके हैं।

ज़मीन के ख़ुदा बनने का दावा करने वाले आज सारी ताक़त लगाकर भी इस ख़तरनाक वायरस और इस बीमारी से अपनों को नहीं बचा पा रहे हैं।

तू हम सब को देख रहा है।

■ अबू यह्या

पॉज़िटिव सोच

"दो तिहाई रात गुज़र चुकी थी और मैं नमाज़े शब पढ़ रहा था। नमाज़ की कुछ रकअतें पढ़ने के बाद मैं पानी पीने के लिए उठा। मम्मी के कमरे के पास से गुज़रते हुए ख़याल आया कि देख लूँ, उन्हें किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं है। अन्दर झांका तो लगा कि उनके कमरे में बहुत ठंड हो रही है। मैं उन्हें चादर उढ़ाने लगा तो उनकी आँख खुल गई। मैंने उनसे पूछा कि आपको किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं है। उन्होंने कहा, "बेटा! मैं आज गोली खाना भूल गई हूँ, इसलिए टाँगों में दर्द हो रहा है।" मैं उनकी टाँगें दबाने वहीं बैठ गया। कुछ देर बाद वह आराम से सो गईं तो मैं उठने लगा और उसी बीच मेरा चश्मा मेरे घुटने के नीचे आकर टूट गया जो मैंने उतार कर नीचे रख दिया था।"

यह एक साहब की ज़िन्दगी का वाक़िआ है जो वह मुझे सुना रहे थे।

वह साँस लेने के लिए पल भर के लिए रुके तो मैंने कहा, "यह तो आपके साथ बहुत बुरा हुआ। आप एक तरफ़ बेहतरीन इबादत में लगे हुए थे। दूसरी तरफ़ माँ की ख़िदमत, वह भी उनकी तकलीफ़ के दिनों में। लेकिन आपको इसका कुछ अच्छा बदला नहीं मिला।"

वह बोले: "हाँ! पल भर के लिए मैं भी यही सोच रहा था मगर फिर मुझे लगा कि नये चश्मे का यूँ टूट जाना कोई नुक़सान नहीं, बल्कि नक़द इनाम है। यह मेरी इबादत के क़ुबूल होने की निशानी है। ज़ाहिरी तौर पर मेरा नज़र का चश्मा टूटा है, मगर इसके बदले में मुझे वह नज़र दे दी गई है जो रात के अन्धेरे में मुझे जन्नत का साफ़ नज़ारा करा रही है। सिर्फ़ यही नहीं बल्कि अगले हफ़्ते मेरे साथ एक बहुत बड़ी बात हुई लेकिन ख़ुदा के करम से मुझे कोई नुक़सान नहीं पहुँचा। अगर मैं उस वक़्त निगेटिव अंदाज़ में सोचने लगता तो ख़ुदा के बारे में बुरा गुमान करके अपनी मेहनत बर्बाद कर बैठता और दुनिया व आख़िरत की न जाने कितनी भलाईयों से दूर हो जाता।"

वह अपनी बात ख़त्म करके कमरे से बाहर निकलने के लिए उठे, दरवाज़े के पास पहुँच कर थोड़ी देर के लिए ठहरे और यह कहते हुए बाहर निकल गये:

"इस दुनिया में जितना अहम हमारा अमल है, उस से कहीं ज़्यादा अहम हमारे सोचने का अन्दाज़ है। ज़िन्दगी का हर इत्मिनान व ख़ुशी, पॉज़िटिव सोच में छुपी है। जिसके पास पॉज़िटिव सोच की दौलत नहीं है उसका कोई काम उसे ख़ुशी और कामयाबी नहीं दे सकता।"

तू हमारी दुआएं सुनता होगा।

हमारा डर तुझ से छुपा नहीं है।

हमारे दिल की हालत भी तू जानता है।

तुझे कुछ सुनाने या बताने का मक़सद यह नहीं है कि तुझे यह सब पता नहीं है लेकिन शायद अभी तू इतना नाराज़ है कि हमारी दुआएं तेरी रहमत को जोश नहीं दिला रही हैं।

ऐसा लगता है जैसे तेरी तरफ़ से एक ख़ामोशी सी है। तेरी दुनिया में जो उधम इन्सान ने मचा रखा था तू उस से सख़्त नाराज़ है।

ऐ ख़ुदा! हमें इस बीमारी से ज़्यादा इस ख़ामोश नाराज़गी से डर लगता है।

तूने कहा था कि मेरी रहमत से मायूस न होना... इसी उम्मीद पर सारी दुनिया की तरफ़ से और ख़ास तौर से मुस्लिम उम्मत की तरफ़ से तुझ से दुआ है हम पर रहम फ़रमा!

हमें माफ़ कर दे!

तूने हज़रत यूनुस[अ०] को मछली के पेट से निकाल लिया था।

तूने हज़रत इब्राहीम[अ०] के लिए आग ठण्डी कर दी थी।

तूने हज़रत मूसा[अ०] को फ़िरऔन से बचा लिया था!

ऐ मालिक! हमें और हमारी दुनिया को इस बीमारी से बचा ले!

हम बेबस हैं और तेरे आगे सजदे में सर झुकाए हुए हैं।

हम तेरी बारगाह में हाथ फैलाए हुए हैं।

मालिक! हम पर वह बोझ न डाल जिसके उठाने की हम में ताक़त नहीं है।

हम पर अपनी रहमत की बारिश कर दे!

हमारे लिए इन सख़्तियों को आसान बना दे!

ऐ ख़ुदा! ऐ मालिक! हमें तेरी रहमत की शक्ल में तेरे जवाब का इन्तेज़ार है।

शरई अहकाम

सवाल- क्या औरत और मर्द घर में साथ खड़े होकर नमाज़ पढ़ सकते हैं ?

जवाब- आयतुल्लाह ख़ामेनईः अगर औरत मर्द के साथ या उससे आगे खड़ी हो और दोनों के बीच में एक बालिश्त (6 इंच) की दूरी हो तो दोनों की नमाज़ सही है।

आयतुल्लाह सीस्तानीः नहीं! अगर साथ खड़े होंगे तो दोनों की नमाज़ बातिल हो जाएगी।

अगर औरत आगे होगी तो तब भी दोनों की नमाज़ बातिल हो जाएगी।

अगर मर्द औरत से इतना आगे हो कि औरत के सजदे की जगह मर्द के ज़ानू के बराबर हो या उस से पीछे हो तो दोनों की नमाज़ सही होगी।

अगर औरत मर्द से साढ़े चार मीटर या उस से ज़्यादा आगे है तो भी नमाज़ सही है।

अगर औरत मर्द से आगे है और दोनों के बीच में पर्दा या दीवार जैसी कोई चीज़ है तब भी नमाज़ सही है।

सवाल- अज़ान व अक़ामत किन नमाज़ों से पहले कही जाती है ?

जवाब- सिर्फ़ रोज़ाना की पाँच वक़्त की नमाज़ से पहले अज़ान व अक़ामत कहना मुस्तहब है। अगर दो नमाज़ें मिलाकर पढ़ी जाएं तो दूसरी नमाज़ में सिर्फ़ अक़ामत मुस्तहब है।

सवाल- अगर किसी आदमी ने मय्यत को छुआ हो तो क्या आदमी को छू लेने से ग़ुस्ले मस्से मय्यत वाजिब हो जाता है ?

जवाब- नहीं! ग़ुस्ले मस्से मय्यत सिर्फ़ मय्यत को छूने से वाजिब होता है। वह भी मरने के बाद बॉडी के ठण्डा होने के बाद और मय्यत को ग़ुस्ल दिये जाने से पहले। अगर इस बीच में कोई मय्यत को छू ले तो उस पर ग़ुस्ले मस्से मय्यत वाजिब हो जाता है।

सवाल- क्या ईद की नमाज़ जमाअत के बग़ैर हो सकती है ?

जवाब- हो सकती है।

सवाल- क्या ईद की नमाज़ में पहली रकअत में सूरए सब्बिहिस-म रब्बिकल आला और दूसरी रकअत में सूरए शम्स का पढ़ना ज़रूरी है ?

जवाब-इन सूरों का पढ़ना मुस्तहब है लेकिन अगर इनकी जगह पर कोई दूसरा सूरह जैसे सूरए क़द्र, सूरए तौहीद या सूरए कौसर वग़ैरा भी पढ़ी जाए तब भी नमाज़ सही है।

सवाल- फ़ितरा कितना निकाला जाएगा ?

जवाब- 3 किलो गेहूँ या चावल में से जो इन्सान ज़्यादातर खाता हो या उसके बराबर क़ीमत।

सवाल- फ़ितरा निकालने का वक़्त क्या है ?

जवाब- ईद का चाँद निकलने से ईद के दिन नमाज़े ईद तक और अगर नमाज़े ईद नहीं पढ़ना है तो ज़वाल तक...।

सवाल- अगर लिबास पर कोई पिक्चर बनी हो और उसको पहन कर नमाज़ पढ़ी जाए तो क्या हुक्म है ?

जवाब- ऐसा करना मकरूह है लेकिन नमाज़ बातिल नहीं होती।

सवाल- क्या छत पर खुले आसमान के नीचे नमाज़ पढ़ी जा सकती है ?

जवाब- पढ़ी जा सकती है।

सवाल- क्या किसी को बरहना (नंगा) देखने से वुज़ू बातिल हो जाता है ?

जवाब- नहीं!

सवाल- टाइट कपड़े पहन कर नमाज़ पढ़ने का क्या हुक्म है ?

जवाब- मकरूह है।

सवाल- गन्दे कपड़ों में नमाज़ पढ़ने का क्या हुक्म है ?

जवाब- मकरूह है।

सवाल- क्या नेल पॉलिश लगाकर वुज़ू किया जा सकता है ?

जवाब- हर वह चीज़ जो स्किन तक पानी के पहुँचने में रुकावट बन जाती है अगर वह वुज़ू वाले हिस्से पर लगी हो तो वुज़ू सही नहीं है और नेल पॉलिश पानी के पहुँचने में रुकावट है।

सवाल- किन हालतों में क़ुरआन के टेक्स्ट को नहीं छू सकते ?

जवाब- 1. जिनाबत की हालत में 2. वुज़ू के बग़ैर 3. औरतों के पीरियड्स की हालत में।

सवाल- क्या हम इस्राईली प्रोडक्ट्स नहीं ख़रीद सकते ?

जवाब- नहीं! वह मुल्क जो मुसलमानों से जंग की हालत में हों उनके प्रोडक्ट्स को न ही ख़रीदा जा सकता है और न बेचा जा सकता है। इस्राईल इस ज़माने में मुसलमानों से जंग की हालत में है।

सवाल- क्या शरई अहकाम सीखना हम लोगों के लिए ज़रूरी है ?

जवाब- जिन शरई अहकाम के न सीखने से किसी वाजिब के छूट जाने या हराम में पड़ने का डर हो उन अहकाम का सीखना ज़रूरी है।

(आयतुल्लाह ख़ामेनई और आयतुल्लाह सीस्तानी के फ़तवों के मुताबिक़)

■ आयतुल्लाह मुजतबा तेहरानी

इमाम सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं

(1)

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं:

ख़ुदा से दुनिया में आफ़ियत और बेनियाज़ होने (मोहताज न होने) की दुआ माँगो और आख़िरत के लिए मग़फ़िरत और जन्नत माँगो।

दुनिया में बेनियाज़ी का मतलब माल और दौलत इकट्ठा करना नहीं है क्योंकि माल और दौलत इकट्ठा करने के बाद भी टेंशन, लालच, जलन, स्ट्रेस, डिप्रेशन और दूसरी तरह की बहुत सारी परेशानियाँ इन्सान की ज़िन्दगी में आ जाती हैं। न जाने कितने लोग हैं जिनके पास पैसा बहुत ज़्यादा है लेकिन वह बेनियाज़ होने का एहसास नहीं करते और सुकून उनकी ज़िन्दगी में कहीं नहीं होता।

''बेनियाज़ी'' उस रूहानी हालत को कहते हैं जिसमें इन्सान ख़ुदा को छोड़ कर दूसरी किसी भी चीज़ की ज़रूरत महसूस न करे (अपने आप को किसी दूसरे का मोहताज न समझे) और वह ख़ुदा से अपने दीन और दुनिया की ''आफ़ियत'' की दुआ करता रहे।

''आफ़ियत'' का मतलब है कि इन्सान ख़ुदा की हिफ़ाज़त और उसकी पनाह में आ जाए और एक मिनट के लिए भी उसकी पनाह से बाहर न निकले ताकि दुनिया और आख़िरत में उसके जिस्म, उसकी रूह, उसकी दुनिया और आख़िरत को कोई नुक़सान न पहुँचे।

इसी लिए हमें हुक्म दिया गया है कि ख़ुदा से अपनी दुनिया और दीन दोनों की आफ़ियत माँगते रहो यानी दुनिया और जिस्म की आफ़ियत भी ज़रूरी है क्योंकि दुनिया में हो सकता है कि जिस्म को कोई तकलीफ़ हो जाए, कोई बीमारी हो जाए और ख़ुदा उसे कुछ टाइम के बाद तन्दुरुस्ती दे दे या दुनिया की जो कठिनाईयाँ हैं उन से इन्सान को छुटकारा मिल जाए... लेकिन दुनिया की आफ़ियत से ज़्यादा ज़रूरी दीन की आफ़ियत है। अगर दीन की आफ़ियत इन्सान को नसीब न हो तो दुनिया और आख़िरत दोनों बर्बाद हो जाती हैं।

''आख़िरत के लिए मग़फ़िरत की और उसके बाद जन्नत की दुआ करो।''

मग़फ़िरत की दुआ इसलिए ज़रूरी है क्योंकि जन्नत एक पाक जगह है और वहाँ गुनाहगार नहीं जा सकता।

इसलिए ज़रूरी है कि पहले इन्सान ख़ुद को गुनाहों से पाक करे और फिर ख़ुद को नेकियों से सजा कर जन्नत की तरफ़ क़दम बढ़ाए।

(2)

अब्दुल्लाह इब्ने सिनान इमाम सादिक़[अ०] की एक हदीस बयान करते हुए कहते हैं:

मैंने इमाम सादिक़[अ०] से पूछा कि फ़रिश्ते अफ़ज़ल (बड़े) हैं या इन्सान?

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने जवाब में कहा: ''अमीरुलमोमिनीन अली[अ०] फ़रमाते हैं, ''ख़ुदा ने फ़रिश्तों को तो अक़्ल दी है लेकिन उनमें शहवत (डिज़ायर्स) नहीं रखी। जानवरों में शहवत रखी है लेकिन उन्हें अक़्ल नहीं दी है। लेकिन इन्सानों को दोनों चीज़ें दी हैं। अब जिसकी अक़्ल उसकी शहवत पर भारी पड़ जाएगी वह फ़रिश्तों से भी आगे निकल जाएगा और जिसकी शहवत उसकी अक़्ल पर छा जाएगी वह जानवरों से भी बुरा बन जाएगा।''

फ़रिश्ते यानी अक़्ल। अक़्ल से हटकर फ़रिश्ते कुछ भी नहीं होते। जानवर यानी शहवत। जानवर शहवत से हटकर कुछ भी नहीं होते। जबकि इन्सान अक़्ल और शहवत दोनों से मिल कर बना है।

अब जो इन्सान खाने-पीने में, कपड़ों में, घर-गाड़ी और इसी तरह की दूसरी चीज़ों को पूरा करने में लगा रहता है वह जानवरों में शामिल हो जाता है बल्कि उन से भी नीचे गिर जाता है।

जो इन्सान अपनी ज़िम्मेदारियां निभाते हुए ख़ुदा की इबादत और उसके रास्ते पर चलने की कोशिश में लगा रहता है और वह दुनिया की हर चीज़ का इस्तेमाल ख़ुदा तक पहुँचने के लिए करता है और अपनी पूरी ताक़त और सलाहियत ख़ुदा की इबादत और उसके बन्दों की ख़िदमत में लगा देता है, वह न सिर्फ़ यह कि फ़रिश्तों से भी आगे निकल जाता है बल्कि फ़रिश्ते तक उसकी ख़िदमत में लग जाते हैं।

(3)

''जब ख़ुदा किसी बन्दे की भलाई चाहता है तो उसे दुनिया में ज़ोहद की तौफ़ीक़ देता है, उसे दीन की समझ देता है, उसे उसकी

कमियाँ दिखाता है और जिसे यह सब दे दिया जाए वह ऐसा ही है जैसे उसे दुनिया और आख़िरत की सारी भलाई दे दी गई हो।''

इन्सान के साथ ख़ुदा की भलाई यह है कि ख़ुदा इन्सान को दुनिया की मोहब्बत के जाल में नहीं फंसने देता।

''ज़ोहद'' का मतलब यह है कि इन्सान दुनिया को दिल न दे बैठे। यह उसी वक़्त होता है जब इस काम में ख़ुदा भी इन्सान की मदद कर रहा हो। अगर ख़ुदा की मदद न हो तो इन्सान ज़ाहिद नहीं बन सकता। ज़ाहिद वह नहीं होता जिसके पास दुनिया का कुछ भी न हो या जिसे किसी से कोई मतलब न हो, बल्कि ज़ाहिद वह जिसके पास जो कुछ भी है या दुनिया से उसका जो भी रिश्ता है वह सिर्फ़ ख़ुदा के लिए हो। अगर उसके पास माल और दौलत होती है तो वह उसका ग़ुलाम नहीं बन जाता। वह दुनिया भी चाहता है तो ख़ुदा के लिए और उसे इस्तेमाल भी करता है तो ख़ुदा के रास्ते में।

दूसरी चीज़ यह है कि इन्सान ख़ुदा की मदद से दीन को समझ ले, वह भी थोड़ा सा और ऊपर-ऊपर से नहीं बल्कि उसके अन्दर दीन की पूरी समझ पैदा हो जाए।

तीसरी चीज़ यह है कि इन्सान की भलाई इस में है कि वह अपनी कमियों को अच्छी तरह से जान ले। दुनिया की बुराईयों को भी जान ले। दुनिया को जानना इसलिए ज़रूरी है क्योंकि दुनिया ऊपर से बहुत अच्छी और ख़ूबसूरत लगती है लेकिन अन्दर से यह बहुत ख़तरनाक है। अगर इन्सान चाहे तो ख़ुदा उसे दुनिया के अन्दर की कमियाँ भी दिखा देता है और वह दुनिया की हक़ीक़त को गहराई के साथ जान लेता है।

यह तीन वह चीज़ें हैं जिन से इन्सान को दुनिया और आख़िरत दोनों की भलाई मिल जाती है।

(4)

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] से

''इह्दिनस-सिरातल-मुस्तक़ीम''

(اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيم)

के बारे में पूछा गया तो आपने फ़रमायाः

इसका मतलब यह हैः ऐ ख़ुदा! हमारी हिदायत कर उस रास्ते की तरफ़ जो हमें तेरी मोहब्बत तक ले जाए और हमें तेरी जन्नत में ले जाए। अगर हम इस रास्ते पर नहीं चले तो हम अपने नफ़्स (दिल) की ख़्वाहिशों (डिज़ायर्स) के पीछे चल पड़ेंगे।

हम सब ख़ुदा से हिदायत चाहते हैं लेकिन वह हिदायत जो हमें उसकी मोहब्बत तक ले जाए यानी हम ख़ुदा से दुआ करते हैं कि ख़ुदाया! हमारा हाथ पकड़ कर उस रास्ते पर चला जिस पर चल कर तेरी मोहब्बत हमारे दिल में उतर जाए क्योंकि अगर तेरी मोहब्बत हमारे दिल में बस गई तो यह मोहब्बत हमें तेरी उस जन्नत में ले जाएगी जो तूने उन लोगों के लिए बनाई है जिनका मोमिन और मुत्तक़ी हैं।

यह कौन सी जन्नत है ? हदीसों में है कि यह वह जन्नत में जिसमें ख़ुदा के ख़ास बन्दे उस से मुलाक़ात करेंगे। यहाँ इस बात की तरफ़ ध्यान देना ज़रूरी है कि वह इन्सान जो ख़ुदा की मोहब्बत, उसकी हिदायत और उसकी जन्नत चाहता है, वह इस रास्ते पर चलने की कोशिश भी करता है। सिर्फ़ चाहने से और ज़बान से माँगने से यह चीज़ें नहीं मिलतीं। हम ज़बान से एक रास्ते पर चलने की बात करें लेकिन अमल से उसका उलटा करें और फिर नतीजा वह चाहें जो हमारी मर्ज़ी के मुताबिक़ हो तो यह कभी नहीं हो सकता।

(5)

इमाम सादिक़[अ०] ने फ़रमाया हैः

दुनिया एक जिस्म की तरह है जिसका सर घमण्ड और ख़ुद को बड़ा समझना है।

इसकी आँख हद से ज़्यादा किसी चीज़ की चाहत है।

इसका कान लालच है।

इसकी ज़बान दिखावा है।

इसका हाथ शहवत (डिज़ायर्स) है।

इसका पैर ख़ुद को अच्छा समझना है।

इसका दिल ग़फ़लत है।

इसका वुजूद फ़ना है।

इसका नतीजा ख़त्म हो जाना है।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने इस हदीस में दुनिया को एक जिस्म जैसा बताया है जिसके हर हिस्से को एक ख़ास काम के लिए बनाया गया है। यह सब एक-दूसरे के साथ गहरा रिश्ता रखते हैं और एक-दूसरे पर गहरा असर डालते हैं।

दुनिया का सर ख़ुद को दूसरों से बड़ा समझना है यानी इन्सान के अन्दर की वह हालत जिसकी वजह से वह ख़ुद को दूसरों से बड़ा समझता है। इस्लाम में इसी को तकब्बुर या घमंड कहते हैं।

दुनिया की आँख यानी सब कुछ अपने लिए चाहना। यहाँ तक कि इन्सान वह चीज़ें भी इकट्ठा करना शुरु कर देता है जिनकी उसे कोई ज़रूरत नहीं होती और उनका ज़िन्दगी में उसे कोई फ़ायदा नहीं होने वाला।

दुनिया वालों की एक क्वालिटी यह भी होती है कि जो भी चीज़ उन्हें नज़र आती है उसे ख़रीद लेते हैं चाहे उस चीज़ की उन्हें

आप भी मरयम के लिए आर्टिकल भेज सकती हैं

1. A4 साइज़ पर लिखा हो।
2. पेपर के एक साईड पर लिखा हो।
3. पहले कहीं छपा न हो।
4. आर्टिकिल की ओरिजिनल कॉपी भेजिए।
5. भेजे गए आर्टिकिल्स एडिटोरियल बोर्ड से पास होने के बाद ही पब्लिश किए जाएंगे।
6. आर्टिकिल रिजेक्ट होने पर उसकी वापसी नहीं होगी।
7. आर्टिकिल सिलेक्ट हो जाने के बाद अपने मुनासिब वक़्त पर पब्लिश किया जाएगा।
8. आर्टिकिल में एडिटर को बदलाव का इख़्तियार होगा।
9. आर्टिकिल के साथ अपना पूरा एड्रेस और कांटेक्ट नम्बर ज़रूर भेजिए।

ज़रूरत हो य न हो।

दुनिया का कान लालच है यानी जिस चीज़ के बारे में इन्सान सुनता है फ़ौरन उसको पाने की आरज़ू या चाहत उसके दिल में पैदा हो जाती है। ऐसा इन्सान हमेशा यह समझता है कि उसे फ़ुलाँ और फ़ुलाँ चीज़ की ज़रूरत है, अगर उस चीज़ की ज़रूरत न भी हो तब भी वह उस चीज़ को पाने की कोशिश करता है। उसकी सारी यह कोशिश होती है कि दूसरे उसे सब कुछ दे दें, जो देते हैं वह उनकी तारीफ़ें करता है और जो नहीं देते वह उनकी बुराई करने लगता है।

दुनिया की ज़बान दिखावा है। दिखावे का मतलब यह है कि इन्सान अगर कोई काम करे तो ख़ुदा के लिए न करे बल्कि दूसरों को दिखाने के लिए करे।

इस हदीस में इसका मतलब किसी भी काम को लोगों के लिए करना या छोड़ना है और वह भी निफ़ाक़ के साथ यानी दो चेहरों के साथ। ऐसे आदमी के काम दिखता कुछ है और उसकी हक़ीक़त कुछ और होती है।

दुनिया वालों की ज़बान भी एक नहीं होती और वह दुनिया को पाने के लिए दिखावे, चापलूसी, झूठ, इल्ज़ाम, दूसरों का मज़ाक़ उड़ाना और इस तरह के दूसरे काम करते हैं।

दुनिया का हाथ शहवत है। दुनिया वालों के हाथ उन चीज़ों की तरफ़ नहीं बढ़ते जो अक़्ल और शरीअत के मुताबिक़ होती हैं बल्कि उन चीज़ों की तरफ़ बढ़ते हैं जो अक़्ल और शरीअत के उलट होती हैं।

दुनिया का पैर उज्ब (ख़ुद को पसन्द करना) है यानी इन्सान ख़ुद को दूसरों के सामने ऐसे दिखाना चाहता है कि दूसरे उसकी तारीफ़ करें बल्कि वह ख़ुद ही अपनी तारीफ़ करने लगता है और ख़ुद को सबसे अच्छा बताता है।

जिस्म के सभी हिस्सों का सेन्टर जो सब को ज़िन्दा रखता है और सब को ख़ूराक पहुँचाता है दिल है। असल में दिल ही सबको कन्ट्रोल करता है।

अगर दिल में सही अक़ीदा और अच्छे काम अपनी जगह न बना पाएं तो इन्सान ग़फ़लत का शिकार हो जाता है। यह चीज़ इन्सान को न सिर्फ़ ख़ुदा से अलग कर देती है बल्कि दूसरे इन्सानों से भी दूर कर देती है जिसके बाद इन्सान हर जुर्म (क्राइम) आसानी के साथ कर लेता है।

■ जावेद चौधरी

शुक्र का सजदा

बड़े मोमिन और अल्लाह वाले बुज़ुर्ग थे। पूरी ज़िन्दगी सजदे और शुक्र में गुज़ारी। ख़ुदा के फ़ज़्ल व करम के दरवाज़े भी हमेशा उन पर खुले रहे। रिज़्क़, शोहरत, इज़्ज़त और पर्सनॉलिटी लेकिन फिर अचानक नज़रें कमज़ोर होना शुरु हो गयीं, दाईं आँख में धुंधलाहट आ गई। ऐनक बदल कर काम चलाने की कोशिश की लेकिन फिर बाईं आँख भी दूधिया हो गयी। डॉक्टर ने ऑप्रेशन का मश्वरा दे दिया।

बुज़ुर्ग ने ऑप्रेशन करा लिया। हॉस्पिटल से जाने लगे तो डॉक्टर ने कहा कि आप पट्टी खुलने तक झुक नहीं सकते। बुज़ुर्ग ने वजह पूछी तो डॉक्टर ने जवाब दियाः आप झुकेंगे तो आँखों पर दबाव पड़ेगा, ज़ख़्म खुल जाएंगे और यूँ रौशनी चली जाएगी। इसलिए पूरी तरह ठीक होने से पहले झुकने की ग़लती न कीजिएगा। बुज़ुर्ग ने पूछाः तो क्या मैं सजदा भी नहीं कर सकता? डॉक्टर ने जवाब दियाः बिल्कुल नहीं! आपके लिए सजदा ख़तरनाक साबित होगा।

बुज़ुर्ग घर चले गये।

बच्चों ने तीन दिन बाद डॉक्टर से कॉन्टेक्ट किया और बताया कि हमारे पापा खाना नहीं खा रहे हैं। सिर्फ़ पानी पीते हैं और चुपचाप लेट जाते हैं। डॉक्टर ने हंस कर जवाब दियाः नार्मल चीज़ है, चबाने से आँखों पर दबाव पड़ता है, इसलिए ज़्यादा बीमार ऑप्रेशन के तीन-चार दिनों तक खाना नहीं खा पाते, आप उन्हें लिक्विड फूड देना शुरु कर दीजिए। बच्चों ने पापा के सामने लिक्विड फूड का ढेर लगा दिया लेकिन पापा ने यह खाना खाने से भी इनकार कर दिया। खाना न खाने की वजह से बुज़ुर्ग कमज़ोर होते चले गये। वह बाथरूम तक नहीं जा पा रहे थे। बच्चे डॉक्टर को घर ले आए। डॉक्टर ने ज़ोर देकर पूछाः चाचा! जी आप खाना क्यों नहीं खा रहे हैं? बुज़ुर्ग चुप रहे। डॉक्टर ने दूसरी बार पूछा कि क्या आपका खाना खाने को दिल नहीं चाहता?

बुज़ुर्ग ने धीरे से जवाब दियाः मैं खाने का बहुत शौक़ीन हूँ, मेरा बहुत दिल चाहता है। डॉक्टर ने पूछाः फिर आप खा क्यों नहीं रहे हैं? बुज़ुर्ग ने फिर धीरे से कहाः बेटा! मैं जिस ख़ुदा को सजदा नहीं कर सकता मुझे उसका रिज़्क़ खाते हुए शर्म आती है। सजदा करूँगा तभी खाना खाऊँगा। डॉक्टर ने हैरान होकर बच्चों की तरफ़ देखा। बच्चों ने बतायाः हमारे पापा अपनी जवानी से नमाज़ पढ़ते आ रहे हैं, अल्लाह को सजदा करते हैं, उसकी नेमतों का शुक्र अदा करते हैं और उसके बाद ही खाने की किसी चीज़ को हाथ लगाते हैं। आपने सजदे से रोक दिया और पापा ने खाना छोड़ दिया। डॉक्टर की आँखों में आँसू आ गये।

हम सबकी आँखों में भी आँसू आना चाहिएं। ख़ुदा ने हमें क्या-क्या नेमत नहीं दीं! आप सिर्फ़ अपने ज़माने को ही ले लीजिए। ख़ुदा ने हमें ऐसे वक़्त में पैदा किया है जब दुनिया की 90% नामुमकिन चीज़ें मुमकिन हो चुकी हैं। आप दुनिया के किसी भी कोने में जा सकते हैं, आपको कोई नहीं

रोकेगा। आप अरब बल्कि खरबपति बन सकते हैं आपके रास्ते में कोई रुकावट खड़ी नहीं करेगा।

आपको कोई भी बीमारी है, ख़ुदा ने दुनिया के किसी न किसी कोने में उसकी शिफ़ा का बन्दोबस्त कर दिया है। आप दुनिया की हर किताब पढ़ सकते हैं। दुनिया भर की अदालतें भी आपके लिए खुली हैं और दुनिया के सारे एजुकेशनल सेन्टर्स की दरवाज़े भी। आज से पचास साल पहले तक लोग मलेरिया, टी.बी., ख़सरा, काली खाँसी और पोलियो से मर जाते थे। हम आज अपने बच्चों को वैक्सीन लगवा देते हैं और वह ज़िन्दगी भर के लिए इन बीमारियों से बचे रहते हैं।

इन्सान ने अपनी उम्र भी बढ़ा ली है। दूसरी वर्ल्ड वॉर तक उम्र पचास साल होती थी। लोग 45 साल की उम्र में रिटायर हो जाते थे और रिटायरमेन्ट से पाँच-दस साल बाद दुनिया से चल बसते थे लेकिन आज दुनिया की एवरेज उम्र बढ़ चुकी है। जापाना में सौ साल से ज़्यादा उम्र के 67 हज़ार 824 लोग मौजूद हैं और यह चलते-फिरते और दौड़ते-भागते हैं। अमेरिका में मर्द 90 साल और औरतें 92 साल ज़िन्दा रहती हैं। यूरोप में मर्दों की एवरेज उम्र 80 साल और औरतों की 84 साल हो चुकी है।

क्या यह शुक्र के लिए काफ़ी नहीं है? क्या हमें दुनिया के बेहतरीन वक़्त में पैदा होने पर अल्लाह का शुक्र अदा नहीं करना चाहिए? अगर अल्लाह हमें दो-ढाई सौ साल पहले पैदा कर देता और हम किसी ख़तरनाक बीमारी, जंग या किसी दरिन्दे का खाना बन जाते या फिर ग़ुलाम होते और किसी अमीर के घोड़ों की गन्दगी साफ़ करते-करते मर जाते तो हम क़ुदरत का क्या बिगाड़ सकते थे। क्या हम उस ज़माने में अपने जन्म पर कोई सवाल उठा सकते थे? क्या हम क़ुदरत से टकरा सकते थे? जी नहीं! इसलिए अगर हम इक्कीस्वीं सदी में हैं तो यह भी अल्लाह की ख़ास मेहरबानी और उसका करम ही है और हमें इस करम पर उसका शुक्र अदा करना चाहिए।

हम रोज़ अपनी मर्ज़ी से सोते और अपनी मर्ज़ी से जागते हैं। हमें नींद के लिए दवाईयों की ज़रूरत नहीं होती और अगर होती भी हो तो एक छोटी सी गोली हमें नींद की गहरी वादी में ले जाती है और फिर हम उस वादी से ठीक-ठाक वापस भी आ जाते हैं। क्या यह अल्लाह का करम नहीं है और क्या इस पर हमें सजदा नहीं करना चाहिए?

हम जो चाहते हैं, खा लेते हैं जो हमारे मेदे और छोटी और बड़ी आँत से होता हुआ बाहर निकल जाता है। हम जो चाहते हैं पी लेते हैं और हमारे गुर्दे उसे फ़िल्टर करके बाहर निकाल देते हैं। गुर्दे उसे हमारे ख़ून या हमारे जिस्म में नहीं रहने देते। हम बारह सौ केमिकल्स में ज़िन्दगी गुज़ार लेते हैं और हमारी नाक या हमारे फेफड़े उन केमिकल्स को जिस्म से बाहर निकालते रहते हैं। यह उन्हें हमें नुक़सान नहीं पहुँचाने देते। हमारी पल्कें हवा में तैरते कचरे को साफ़ करती रहती हैं। हमारे कानों की मैल कीड़ों, मक्खियों और मच्छरों को हमारे दिमाग़ से दूर रखती है। हमारी नाक के ग्लैण्ड्स पॉल्यूशन को हमारे जिस्म के अन्दर नहीं जाने देते। हमारी ज़बान सात मज़े चख लेती हैं। हमारी नाक ख़ुश्बुओं के दस पैटर्न महसूस कर लेती है।

हम जिस चीज़ को छूना चाहते हैं छू लेते हैं। हम जो आवाज़ सुनना चाहते हैं सुन लेते हैं। हम में गर्म और ठण्डे दोनों एहसास अभी तक ज़िन्दा हैं। हम बोल भी सकते हैं। हम अपनी बात भी समझा सकते हैं, हम अपने अल्लाह को याद भी कर सकते हैं और हम अच्छे या बुरे की पहचान भी कर सकते हैं तो फिर हमें और क्या चाहिए?

हमें अपने अल्लाह का शुक्र अदा करने के लिए और कौन सी नेमत या कौन सा करम चाहिए?

मेरे एक अरबपति दोस्त हैं। उन्हें प्रॉस्टेट कैंसर हुआ, ऑप्रेशन हुआ और उनका पेशाब कन्ट्रोल करने का सिस्टम ख़राब हो गया। वह अब अपना पेशाब कन्ट्रोल नहीं कर सकते। पैम्पर लगा कर सारा दिन घर में बैठे रहते हैं। मैं उनके पास गया तो दहाढ़ें मार कर रोने लगे। मैंने तसल्ली दी तो वह आँसू साफ़ करके बोले कि मैं बीमारी की वजह से नहीं रो रहा हू। मैं इसलिए रो रहा हूँ कि अल्लाह ने मुझ से सजदे की तौफ़ीक़ भी वापस ले ली है।

मैं अब न नमाज़ पढ़ सकता हूँ और न उमरा और हज कर सकता हूँ। मैं यह सुन कर काँप उठा और आसमान की तरफ़ देख कर कहाः ख़ुदाया! तेरा कितना करम है, तू ने हमें सजदों की तौफ़ीक़ दे रखी है। हम जब चाहते हैं तेरी बारगाह में सजदा कर लेते हैं। दुनिया में कितने लोग तो सजदा भी नहीं कर पाते।

आप भी सोचिए! आपको भी एहसास हो जाएगा कि हम सब कितने बदबख़्त हैं?

हम सब कुछ उसी का खाते हैं मगर शुक्र के लिए उसे सजदा नहीं करते।

क़ानून ख़ुदा का इबादत भी ख़ुदा की

■ आयतुल्लाह जाफ़र सुब्हानी

जिस तरह यह दुनिया और इसका सिस्टम ख़ुदा के हाथ में है और वही इसको चलाने वाला है और कोई भी इसकी इजाज़त के बग़ैर इस सिस्टम में कोई बदलाव नहीं ला सकता, उसी तरह शरीअ़त भी उसी के हाथ में है। यानी हुकूमत भी उसी का हक़ है, हुक्म भी उसी का चल सकता है, हुक्म व क़ानून बनाने का हक़ भी उसी को है, गुनाहों की मग़फ़िरत व माफ़ी भी उसी के हाथ में है और शिफ़ाअत भी वही कर सकता है। किसी भी इन्सान को उसकी इजाज़त के बग़ैर इन कामों में हाथ लगाने का हक़ नहीं है।

अब अगर ज़मीन पर नबियों और इमामों का हुक्म चलता है तो उसकी वजह यह है कि ख़ुदा की तरफ़ से उन्हें इस काम की इजाज़त और ज़िम्मेदारी दी गई है। इसी लिए उनका हुक्म मानना और उनकी इताअत वाजिब की गई है क्योंकि उनकी इताअत ख़ुद ख़ुदा की इताअत है।

क़ुरआन फ़रमाता हैः ''जिसने रसूल की इताअत की उसने ख़ुदा की इताअत की।''[1]

दूसरी जगह फ़रमाता हैः ''हम ने रसूलों को इसलिए भेजा है ताकि ख़ुदा की इजाज़त और हुक्म से उनकी इताअत की जाए।''[2]

अगर ख़ुदा की इजाज़त न होती तो किसी भी नबी की बात न सुनी जाती और किसी का भी हुक्म न चलता। इस से यह नतीजा निकलता है कि अल्लाह के किसी भी नबी का हुक्म और उसकी इताअत, असल में ख़ुदा का हुक्म और उसकी इताअत है।

हुक्म और फ़ैसला करने का हक़ सिर्फ़ ख़ुदा को है। इसी लिए ख़ुदा के अलावा किसी को भी हुक्म देने और फ़ैसला करने का हक़ नहीं है। क़ुरआन फ़रमाता हैः ''जो ख़ुदा के बताए हुए हुक्म के मुताबिक़ फ़ैसला न करे वह काफ़िर है।''[3]

इसी तरह गुनाहगारों को माफ़ करना और उनकी शिफ़ाअत करना भी ख़ुदा का ही काम है। कोई भी उसकी इजाज़त के बग़ैर शिफ़ाअत नहीं कर सकता। ख़ुदा फ़रमाता हैः ''कौन है जो उसकी इजाज़त के बग़ैर शिफ़ाअत कर सकता है।''[4] या ''शिफ़ाअत वही कर सकते हैं जिन से ख़ुदा राज़ी हो।''[5]

इसलिए इस्लामी अक़ीदे में मग़फ़िरत और शिफ़ाअत के टिकट बेचना और यह सोचना कि ख़ुदा को छोड़ कर कोई भी जन्नत दे सकता है या जहन्नम से बचा सकता है, सही नहीं है। इस बात की इस्लाम में गुन्जाइश ही नहीं है क्योंकि इसकी सिरे से कोई बुनियाद ही नहीं है।

क़ुरआन साफ़ तौर पर कह रहा हैः ''उन्होंने गुनाहों की माफ़ी माँगी और गुनाहों को ख़ुदा के अलावा कोई माफ़ करने वाला नहीं है।''[6]

इन सारी बातों को सामने रखते हुए हम कह सकते हैं कि ख़ुदा पर ईमान रखने वाला इन्सान वही है जो क़ानून, शरीअ़त और ज़िन्दगी के हर मामले में ख़ुदा की तरफ़ मुड़े और सिर्फ़ उसी से हुक्म व क़ानून ले और उसी को क़ानून बनाने वाला, क़ानून चलाने वाला और फ़ैसला करने का हक़ रखने वाला समझे।

जब क़ानून ख़ुदा का और हुक्म ख़ुदा का है तो इबादत और बन्दगी भी उसी की होना चाहिए। यह एक ऐसा अक़ीदा है जो हर आसमानी दीन में पाया जाता है बल्कि एक तरह से कहा जा सकता है कि जितने भी नबी आए वह सब इन्सानों को यही याद दिलाने आए थे कि इन्सान ख़ुदा के बन्दे हैं और उन्हें बस ख़ुदा की बन्दगी करना है।

इसी लिए क़ुरआन फ़रमाता हैः ''हम ने हर उम्मत में एक रसूल भेजा ताकि उन्हें

ख़ुदा की इबादत की तरफ़ बुलाएं और तागूत की बन्दगी से रोकें।''[7]

सभी मुसलमान नमाज़ में एक ख़ुदा की इबादत की गवाही देते हुए कहते हैं: ''ऐ ख़ुदा! हम सब तेरी ही इबादत करते हैं।''[8]

इसलिए इसमें कोई शक नहीं है कि इबादत सिर्फ़ ख़ुदा की करना चाहिए। दूसरी किसी भी चीज़ या आदमी की पूजा से दूर रहना चाहिए।

यहाँ तक तो सब मानते हैं। अगर कोई एतेराज़ या सवाल है तो इसमें है कि फ़ुलाँ चीज़ ख़ुदा की इबादत मानी जाएगी या ख़ुदा को छोड़कर किसी और की इबादत ?

इसके लिए ज़रूरी है कि हम सबसे पहले इबादत समझें कि इबादत आख़िर है क्या। इसके बाद वह काम जो एहतेराम (रेस्पेक्ट) की नियत से किये जाते हैं उन्हें इबादत की लिस्ट से अलग करें।

इस बात में भी कोई शक नहीं है कि माँ-बाप, नबियों और ख़ुदा के वलियों की इबादत करना हराम और शिर्क है लेकिन उनका एहतेराम करना ज़रूरी भी है और तौहीद के मुताबिक़ भी है।

ख़ुदा ने क़ुरआन में यह फ़ैसला सुना दिया है: ''तुम्हारे रब ने यह फ़ैसला कर दिया है कि उसके अलावा किसी की इबादत न करो और अपने माँ-बाप के साथ अच्छा बर्ताव करो।''[9]

अब हमें देखना होगा कि वह कौन सी चीज़ है जो इबादत और एहतेराम को एक-दूसरे से अलग कर सकती है और हमें समझा सकती है कि सजदा तो सजदा है मगर यही सजदा एक जगह ख़ुदा के अलावा दूसरे को सजदा करना कैसे इबादत बन जाता है जैसे फ़रिश्तों से हज़रत आदम[अ०] को सजदा किया था और दूसरी जगह यही सजदा कैसे शिर्क हो जाएगा जैसे बुतों के सामने सजदा करना।

इसका जवाब यह है कि अगर हम किसी को यह सोचकर सजदा करते हैं कि उसी के हाथ में सारी दुनिया है तो यह अक़ीदा सही नहीं है क्योंकि इसका मतलब यह है कि हम ख़ुदा के अलावा दूसरों को भी ''रब'' समझ रहे हैं लेकिन अगर किसी का एहतेराम यह मानकर किया जाए कि वह ख़ुदा का एक अच्छा बन्दा है, उसके अन्दर अच्छी बातें और कमाल पाए जाते हैं जो ख़ुदा की इबादत की वजह से उसे मिले हैं, या वह ख़ुदा की तरफ़ से इन्सानों के लिए रहमतों और नेमतों की वजह बना है तो इस काम को इबादत नहीं समझा जाएगा बल्कि यह एहतेराम कहलाएगा।

अगर क़ुरआन में हज़रत आदम[अ०] के सामने फ़रिश्तों के सजदे या हज़रत यूसुफ़[अ०] के सामने हज़रत याक़ूब[अ०] और उनके बेटों के सजदों को शिर्क नहीं कहा गया तो इसकी वजह यही है कि वह सजदे इस नियत से नहीं थे कि वह सब उनकी इबादत कर रहे थे बल्कि वहाँ मामला कुछ और था कि उन सब को ख़ुदा की इबादत पर यक़ीन था और वह सब अल्लाह की इबादत करते भी थे मगर वह दोनों सजदे हज़रत आदम[अ०] और हज़रत यूसुफ़[अ०] के एहतेराम में थे।

मुसलमान अपने आख़िरी रसूल[स०] और अहलेबैत[अ०] के सामने या उनकी बारगाहों में जो एहतेराम करते हैं उसे इसी फ़ार्मूले के मुताबिक़ समझा जा सकता है। अगर कोई ज़रीह को चूमता है, अल्लाह के रसूल[स०] और अहलेबैत[अ०] की विलादत के मौक़े पर ख़ुशी मनाता है तो वह उनकी इबादत नहीं करता बल्कि एहतेराम करता है क्योंकि कोई भी मुसलमान इन हस्तियों को ''रब'' नहीं मानता है।

इसी तरह इन अल्लाह के प्यारों की तारीफ़ करना, उन के नाम पर नात और मनक़बत पढ़ना, उनके लिए ज़रीह और गुम्बद बनाना ''न ही बिदअत है और न ही शिर्क'' क्योंकि यह सब इन हस्तियों के साथ अपनी मोहब्बत को ज़ाहिर करने का एक तरीक़ा है और इसके लिए क़ुरआन और हदीस में बहुत सी दलीलें भी पाई जाती हैं।

जहाँ तक बुतों की पूजा और उनको सजदा करने की बात है तो मुश्रिकों का यह ईमान होता है कि बहुत से काम दुनिया के मालिक ने इन्हीं बुतों के हाथों में दे रखे हैं, यह शिफ़ाअत भी कर सकते हैं, इनको ख़ुश और नाराज़ करने का असर भी होता है और इस तरह की बहुत सारी बातें जो शिर्क हैं।

यही वह फ़र्क़ है जो एक ही चीज़ को एक जगह इबादत और दूसरी जगह शिर्क बना देता है।

1-सूरए निसा/80, 2-सूरए निसा/64, 3-सूरए मायदा/44, 4-सूरए बक़रा/255, 5-सूरए अम्बिया/28, 6-सूरए आले इमरान/135, 7-सूरए नहल/36, 8-सूरए हम्द/5, 9-सूरए असरा/23

जिसने अपना खेत न सींचा

■ मुमताज़ शीरीं

''आंटी! अम्मी आपको सलाम कह रही हैं और कह रही हैं कि थोड़ा सा लहसुन तो दे दीजिए, दाल में तड़का लगाना है।''

आंटी जवाब देती हैं: ''पहले इधर आ! मैं ज़रा तेरे कान तो खींचूँ, कई दिनों से नज़र क्यों नहीं आया ? यह ले लहसुन और ज़रा सी दाल, अम्मी से कहना कि मुझे भी चखा दें।''

''आंटी सलाम! अम्मी ने यह सब्ज़ी भिजवाई है और आपका सालन मंगवाया है।''

''हाँ, हाँ! बेटा यह लो, और वह तो दो ज़रा। तुम्हारी माँ के हाथों की सब्ज़ी तो ज़बरदस्त होती है।''

यह सब कुछ ज़्यादा पुराने वक़्त की बातें नहीं हैं। पड़ोसियों के बीच एक-दूसरे के साथ इस तरह मिलजुल कर रहने और रस्मों-रिश्तों को मरे हुए बस कुछ साल ही गुज़रे होंगे।

अब हाल यह है कि साथ में बसने वाला भाई बिना बताए अपने सगे भाई के घर चला जाए तो घर वालों को परेशानी हो जाती है। पड़ोसी का बच्चा वक़्त बेवक़्त घर की घंटी बजा दे... यह तो अब हो ही नहीं सकता। रिश्ते मर रहे हैं, पड़ोसियों का मेलजोल और उनके हक़, आपसी मोहब्बत और आदाब को रौंदा जा रहा है। रिश्ते जोड़ने और बाक़ी रखने की तो बात ही नहीं है बल्कि अब तो लोग रिश्ते तोड़ने पर इतराते हैं।

रिश्तों को तोड़ने और रिश्तों को भूल जाने से बढ़ कर कोई गुनाह ऐसा नहीं है जिसकी सज़ा दुनिया में ही दे दी जाती हो। हमारा दीन कहता है कि रिश्तों का ध्यान रखने से मोहब्बत बढ़ती है, माल बढ़ता है, उम्र बढ़ती है और रिज़्क़ भी बढ़ता है, आदमी बुरी मौत नहीं मरता, मुसीबतें और आफ़तें टलती रहती हैं।

रहम ख़ुदा की रहमत की एक झलक है। ख़ुदा का क़ानून है कि जो आपसी रिश्ता जोड़ेगा अल्लाह भी उस से रिश्ता जोड़ेगा और जो भी अपने रिश्तेदारों से रिश्ता तोड़ेगा अल्लाह भी उस से रिश्ता तोड़ देगा।

जैसे-जैसे दुनिया तरक़्क़ी करती जा रही है और जितना पैसा ज़्यादा होता जा रहा है, उतना ही आपसी मेल-जोल और प्यार-मोहब्बत मिटती जा रही है। जिस तरह इन्सान अख़्लाक़, मॉरल्स, तहज़ीब और अदब से दूर होता जा रहा है उसे देखकर डर लगता है कि एक न एक दिन समाज बर्बादी की गहरी खाई में जा गिरेगा।

अल्लाह के रसूल[ﷺ] फ़रमाते हैं: ''तुम में सब से अच्छा वह है जिसका अख़्लाक़ अच्छा हो।''

आज हमारे मॉरल्स इतने बिगड़ चुके हैं कि हम ने अपने दीनी उसूलों को ही भुला दिया है। बोलने-चालने में सख़्ती या कड़वाहट तो जैसे हमारी पहचान बन चुकी है जबकि हमें तो हुक्म दिया गया है कि अपनी बातचीत का अन्दाज़ नर्म रखो क्योंकि लहजे का असर लफ़्ज़ों में भी झलकता है।

माँ की गोद बच्चे का पहला स्कूल होती है इसलिए अख़लाक़ व अदब सिखाना भी माँ की ही ज़िम्मेदारी है। बच्चे को बताया जाए कि किसी से मुलाक़ात हो तो सलाम करने में पहल किया करो, बड़ों का एहतेराम और उनकी इज़्ज़त किया करो, छोटों से मोहब्बत और नर्मी का बर्ताव किया करो, किसी ने एहसान किया हो तो उसका शुक्रिया अदा किया करो, अगर किसी ने कोई चीज़ माँगी हो तो उसे दे दिया करो, मांगी हुई चीज़ न हो तो बड़े प्यार से समझा दिया करो कि नहीं है और सब से बढ़कर चेहरे पर हमेशा मुस्कुराहट रखा करो क्योंकि आधी भलाई इसी में छुपी है।

देखने में यह सारी बातें भी बड़ी छोटी सी लगती हैं लेकिन इन छोटी-छोटी बातों से ही इन्सान एक अच्छा इन्सान बनता है और इन्हीं सारी बातों से इन्सान का अख़लाक़ व बिहेवियर अच्छा होता है। अच्छा बिहेवियर और मॉरल्स इन्सान को बादशाह बना देते हैं। ज़िन्दगी के हर मैदान में अच्छे मॉरल्स की ज़रूरत होती है। फ़ैमिली लाइफ़ में इसकी जगह सबसे ऊपर होती है। अच्छे मॉरल्स और अच्छे बिहेवियर वाली बीवी अपने शौहर और ससुराल वालों के दिल में घर बना लेती है। थकन से चूर शौहर जब घर वापस है तो बीवी के चेहरे की एक

मुस्कुराहट उसकी सारे दिन की थकन उतार देती है।

नर्म मिज़ाजी, अच्छे मॉरल्स, अच्छे बिहेवियर और मिलनसारी से ही दिलों में मोहब्बत पैदा होती है और इन सारी बातों से ही एक अच्छा समाज बनता है।

अल्लाह के रसूल[स०] फ़रमाते हैं, ''नेकियों और अच्छाईयों में से किसी भी अच्छाई को कम मत समझो, चाहे वह नेकी इतनी सी ही क्यों न हो कि तुम अपने भाई से मुस्कुरा कर मिल लो।''

दोस्तों और रिश्तेदारों से सिर्फ़ अल्लाह के लिए मोहब्बत करना चाहिए। अल्लाह के प्यारे बन्दे वही हैं जो अल्लाह के दीन पर चलने की वजह से एक-दूसरे के साथ जुड़ते हैं और कंधे से कंधा और दिल से दिल मिलाकर रहते हैं।

क़यामत में ख़ुदा आवाज़ देगा कि वह लोग कहाँ हैं जो सिर्फ़ मेरे लिए आपस में मोहब्बत किया करते थे। इन सब को बुलाओ क्योंकि आज मैं इन लोगों को अपने अर्श के साए में जगह दूँगा।

रमज़ान का महीना रहमतों और बरकतों का महीना है। यह महीना दूसरों के दुख कम करने और रहम दिली दिखाने का महीना है। यह महीना मोहब्बत और भाइचारे का है। अभी-अभी हम ने रमज़ानुल मुबारक के 30 दिन अल्लाह की रहमतों और बरकतों में गुज़ारे हैं। इस महीने में हमने अपने आप को सुधारने की कोशिश की है। अब हमें अपनी इसी कोशिश को माहे रमज़ान के बाद बाक़ी भी रखना है और आगे भी बढ़ाना है। आइये! अगर किसी से कोई नाराज़गी है तो सब कुछ भुलाकर उसे गले से लगा लें, बिछड़े हुओं से मिल लें, रूठे हुओं को मना लें, अगर किसी से कोई ग़लती हो गई है तो उसको माफ़ कर दें क्योंकि माफ़ी ही सबसे अच्छा बदला है।

इन्सानी ज़िन्दगी में रिश्तों की जगह विटामिन सी की सी है। यह रिश्ते ही हैं जो हमें जीने का हौसला देते हैं और हमारे जीने की वजह बनते हैं। रिश्तों की इस डोर को कमज़ोर न पड़ने दीजिए।

रोज़ा वैसे भी अख़्लाक़ी परवरिश का ज़रिया है। 30 रोज़े रखने के बाद अब अपना हिसाब-किताब कीजिए और देखिये कि आपके अन्दर कौन-कौन सी बुराईयाँ हैं। ज़ाहिर है कि यह काम मुश्किल है लेकिन नामुमकिन नहीं। झूठ, ग़ीबत, हसद-जलन, कंजूसी, दूसरों की शिकायत जैसी कमज़ोरियों पर क़ाबू पाने की कोशिश कीजिए।

ख़ुश नसीब हैं वह लोग जो इस मुबारक महीने में अल्लाह से क़रीब होने के लिए अपने आप को पाक करने की कोशिश कर चुके हैं।

रमज़ान का महीना अपनी ज़िंदगी के नॉर्मल रूटीन को बदलने का महीना है। इस एक महीने में हमारा रूटीन अच्छा-ख़ासा बदल गया है। हमारे रूटीन के कामों में जो अच्छा बदलाव आया है अब हमें उसे बाक़ी रखना है। हम ने अपने आप पर कन्ट्रोल करने की जो कोशिश की है अब हमें उस कंट्रोल को बाक़ी रखना है। हमारे अंदर रोज़े से जो सब्र पैदा हुआ है उस सब्र को बाक़ी रखना है ताकि हमें जिस्मानी और रूहानी सुकून मिल सके।

याद रखिये! रोज़ा एक ऐसी इबादत है जिस से अच्छे अख़लाक़, सच्चे ईमान और ख़ालिस बन्दगी का एहसास पैदा होता है। हर इन्सान के अन्दर की सलाहियतें निखर कर सामने आ जाती हैं। इसलिए इस तीस दिन की वर्कशाप में जो अपनी परवरिश आपने की है उसे बाक़ी रखिए ताकि रमज़ानुल मुबारक के रूहानी झोंके साल भर हमारी रूह को ताज़ा करते रहें। शायर की ज़बान में-

मौसम अच्छा, पानी काफ़ी, मिट्टी भी ज़रखेज़[1]
जिसने अपना खेत न सींचा वह कैसा किसान

1-उपजाऊ

दुआए ख़त्मे कुरआन

اَللّٰھُمَّ آنِسْ وَحْشَتِی فِی قَبْرِی

اَللّٰھُمَّ ارْحَمْنِی بِالْقُرآنِ الْعَظِیمِ واجْعَلْهُ لِی اِمَاماً وَّ نُوراً وَّ هُدیً وَّ رَحْمَةً

اَللّٰھُمَّ ذَكِّرْنِی مِنْهُ مَا نَسِیْتُ وَ عَلِّمْنِی مَا جَهِلْتُ

وَارْزُقْنِی تِلَاوَتَهُ آنَاءَ الَّیلِ وَ آنَاءَ النَّهارِ

وَاجْعَلْهُ لِی حُجَّةً یَّا رَبَّ الْعَالَمِینَ.

وَ تَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ صِدْقاً وَّ عَدْلاً . لا مُبَدِّلَ لِكَلِمَتِهِ وَهُوَ السَّمِیعُ العَلِیمُ

दिल से दिल तक

(4)

ख़ुद से शुरु करो

एक आदमी ने अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास से कहाः ''मैं लोगों को अच्छे कामों की तरफ़ लाना चाहता हूँ और बुराईयों से रोकना चाहता हूँ। इसलिए मैं चाहता हूँ कि लोगों को नसीहत किया करूँ।''

इब्ने अब्बास ने पूछा, ''क्या तुम यह काम शुरु कर चुके हो ?''

उसने कहा, ''अभी सिर्फ़ सोचा है।''

इब्ने अब्बास ने कहा, ''ऐसा करने में कोई मुश्किल नहीं है लेकिन क़ुरआन करीम की इन तीन आयतों की तरफ़ ध्यान रखना।''

पहली आयत कहती हैः

''क्या तुम लोगों को नेकियाँ करने का हुक्म देते हो और ख़ुद अपने आप को भूल जाते हैं।''[1]

क्या तुम्हें यक़ीन है कि इस आयत की तरफ़ तुम्हारा ध्यान है और तुम उन लोगों में से नहीं हो जो दूसरों को तो अच्छा बनाना चाहते हैं लेकिन ख़ुद अच्छे काम नहीं करते ?''

उस आदमी ने कहा, ''नहीं!''

दूसरी आयत कहती हैः

''ऐ ईमान वालो! वह बातें क्यों कहते हो जिन पर तुम ख़ुद अमल नहीं करते। ख़ुदा को यह बात बिल्कुल पसन्द नहीं है कि तुम वह बातें कहो जिन पर अमल नहीं करते हो।''[2]

इस आयत के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है ?क्या तुम्हें यक़ीन है कि तुम उन लोगों में नहीं हो जिनकी इस आयत में बुराई की गई है ?''

उसने कहा, ''नहीं।''

उस आदमी ने कहा, ''तीसरी आयत कौन सी है ?''

तीसरी आयतः

इब्ने अब्बास बोले, ''तीसरी आयत में ख़ुदा अपने एक नबी हज़रत शुऐब की ज़बानी कहता हैः

''मैं कभी वह काम नहीं करता, जिस से तुम्हें रोकता हूँ''[3]

क्या तुम इस आयत पर खरे उतरते हो ?''

उस आदमी ने कहा, ''नहीं।''

इब्ने अब्बास ने कहा, ''अगर ऐसा है तो पहले ख़ुद से शुरु करो, फिर दूसरों को नसीहत करने के बारे में सोचो।''

❀ ❀ ❀

अपने आप को गुनाहों से कैसे रोकें ?

अपनी सोच और अपने ख़यालों या अपने थॉट्स पर कन्ट्रोल रखना बहुत ज़रूरी है। अगर इन्सान अपने थॉट्स को कन्ट्रोल न करे तो उसके यही थॉट्स उसे बर्बादी की तरफ़ ले जा सकते हैं। अगर इन्सान अपने थॉट्स को बिल्कुल आज़ाद छोड़ दे तो अख़्लाक़ी तौर पर इन्सान कमज़ोर हो जाता है।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं, ''अगर तुम अपने नफ़्स को कामों में लगाए नहीं रखोगे तो वह तुम्हें अपने आप में लगाए रखेगा।''

कुछ चीज़ें ऐसी हैं कि अगर इन्सान उन से काम न ले तो उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा, जैसे पत्थर या उसके जैसी दूसरी बेजान चीज़ें। हमारे हाथ में जो अंगूठी है अगर हम उतार कर अलमारी में रख दें तो हमारा कुछ भी नहीं बिगड़ेगा।

लेकिन इन्सान का नफ़्स ऐसा नहीं है। इसलिए उसे हमेशा किसी न किसी काम में लगाए रखना ज़रूरी है। यानी हमेशा किसी न किसी काम में लगा रहे और इधर-उधर न भटके। अगर आप ने उसे छोड़ दिया, उस से कोई मतलब नहीं रखा तो वह आपको अपनी उंगलियों पर नचाएगा। फिर ख़यालों की दुनिया के दरवाज़े खुल जाएंगे, इन्सान हर जगह ख़यालों में खोया रहेगा, बिस्तर

पर, बाज़ार में, ऑफ़िस में, कॉलेज और युनिवर्सिटी में, फिर ख़यालों का यह सिलसिला चल पड़ता है और यही ख़याल इन्सान को गुनाहों की तरफ़ लेकर जाते हैं लेकिन जब इन्सान के पास कोई काम होता है और वह काम उसे अपने साथ जोड़े रखता है तो इन्सान गुनाहों की तरफ़ नहीं जा पाता।

(शहीद मुर्तज़ा मुतह्हरी)

❁ ❁ ❁

वुज़ू करके दूध पिलाना

शैख़ मुर्तज़ा अंसारी तेरहवीं हिजरी के एक बहुत बड़े आलिम थे, जिनके इल्म का चर्चा पूरे इराक़ में था। उनकी वफ़ात को डेढ़ सौ साल से ज़्यादा गुज़र चुके हैं लेकिन उनकी लिखी हुई किताबें आज भी शिया मदरसों में पढ़ाई जाती हैं। शैख़ अंसारी इल्म के हिसाब से भी बेमिसाल थे और रूहानियत के हिसाब से भी।

किसी ने उनकी माँ को मुबारकबाद देते हुए कहा, ''आपका बेटा इस वक़्त शिया दुनिया में सबसे बड़ा आलिम और एक बहुत ही नेक, मुत्तक़ी और ज़ाहिद इन्सान है।''

उन्होंने जवाब में कहा, ''मुझे ऐसी ही उम्मीद थी कि मेरा बेटा इस से भी बड़े मुक़ाम और दर्जे तक पहुँचेगा क्योंकि मैंने उसे हमेशा वुज़ू करके दूध पिलाया है, यहाँ तक कि सर्दी की ठण्डी रातों में आधी रात को भी बग़ैर वुज़ू के उसे दूध नहीं पिलाती थी।

❁ ❁ ❁

ख़ुदा की पनाह या शैतान की ?

जब इन्सान गुनाह करता है और ख़ुदा के हुक्म को अंदेखा कर देता है तो उस वक़्त वह शैतान का बन्दा होता है, चाहे ज़बान से वह शैतान पर हज़ार लानतें ही क्यों न कर रहा हो।

यानी जब कोई आदमी मुँह से तो ''अऊज़ु बिल्लाहि मिनश-शैतानिर-रजीम'' कहे और कैरेक्टर उसका यह हो कि किसी पर इल्ज़ाम लगाए, किसी को गाली बके, किसी की इज़्ज़त के साथ खेले, दूसरों के राज़ सब को बताता फिरे या किसी भी छोटे-बड़े गुनाह की उसे परवाह न हो तो वह अपनी ज़बान से तो ''अऊज़ु बिल्लाहि मिनश-शैतानिर-रजीम'' कहता है लेकिन असल में ''अऊज़ु बिश-शैतानि मिनर-रहमान'' कह रहा होता है यानी वह कह रहा होता है कि मैं ''ख़ुदा से भाग कर शैतान की पनाह में आता हूँ''। ज़बान से तो वह कहता है कि मैं ख़ुदा की पनाह में आता हूँ लेकिन उसका अमल इस से बिल्कुल उलटा होता है और जब ग़फ़लत का पर्दा उठ जाता है तो पता चलता है कि ''अऊज़ु बिल्लाहि'' असल में शैतान ही ने उसकी ज़बान से कहलवाया था ताकि उसके कच्चे अक़ीदे और कमज़ोर ईमान का मज़ाक़ उड़ा सके।

(आयतुल्लाह दस्तग़ैब शीराज़ी)

❁ ❁ ❁

अगर वक़्त हमारे हाथ से निकल जाए, हम कोई अच्छा काम न कर सकें और उधर मौत का वक़्त भी पहुँच जाए और उम्र का चिराग़ बुझने लगे कि इन्सान को तौबा का मौक़ा ही न मिल सके तो ऐसे मौक़े पर शर्मिन्दा होने का कोई फ़ायदा नहीं है।

जब तलहा जंगे जमल में मरवान बिन हकम के तीर से ज़मीन पर गिरा और इस दुनिया से जाने लगा तो कहने लगाः मेरी बदबख़्ती है कि मैं क़ुरैश के अज़ीम इन्सान यानी अली[अ०] की अज़मत को नहीं देख सका, लेकिन तलहा को यह एहसास उस वक़्त हुआ था जब वक़्त हाथ से निकल चुका था और उसकी ज़िन्दगी का दिया बुझने वाला था। तलहा हज़रत अली[अ०] की बैअत करने वाला सबसे पहला आदमी था लेकिन उसने हज़रत अली[अ०] की बैअत तोड़ दी थी क्योंकि हज़रत अली[अ०] ने उसकी ग़लत मांगों को ठुकरा दिया था।

नतीजा यह हुआ कि उसकी दुनिया भी बर्बाद हुई और आख़िरत भी।

❁ ❁ ❁

जनाबे नूह[अ०] और जनाबे लूत[अ०] की बीवियों ने अपने शौहरों को बहुत तकलीफ़ें पहुँचाई थीं और आख़िरी वक़्त तक उन्हें परेशान किया था यहाँ तक कि दोनों पर ख़ुदा का अज़ाब हुआ और वह दोनों उसी हालत में इस दुनिया से चली गयीं।

फ़िरऔन की बीवी हज़रत आसिया ने बिल्कुल इसके उलट किया और ख़ुदा की मर्ज़ी को अपने शौहर की मर्ज़ी से आगे रखा जिसकी वजह से उन्हें ख़ुदा की मर्ज़ी भी मिल गई और हमेशा के लिए जन्नत भी मिल गई।

जनाबे ख़दीजा[अ०] ने भी यही किया और अल्लाह के रसूल[स०] का साथ देने में अपनी सारी ज़िंदगी लगा दी थी। जिसकी वजह से उन्हें दुनिया व आख़िरत दोनों जगह की कामयाबी मिली।

जनाबे ख़दीजा[अ०] के ख़ानदान वालों ने अल्लाह के रसूल[स०] से शादी करने की वजह से उनका बाइकॉट कर दिया था लेकिन जनाबे ख़दीजा[अ०] ने उन सब को छोड़कर अल्लाह से अपना रिश्ता मज़बूत कर लिया था और इस तरह आप भी दुनिया व आख़िरत दोनों जगह कामयाब हो गई थीं।

हुर बिन यज़ीद रियाही ने बाक़ी बची हुई थोड़ी सी ज़िन्दगी को ग़नीमत समझकर करबला के ख़ज़ाने से हमेशा-हमेशा के लिए हीरे-मोती चुन लिए थे।

जी हाँ! जिस आदमी ने वक़्त को ग़नीमत समझा, चाहे थोड़ा सा ही वक़्त क्यों न हो, ख़ुदा का नूर उसके दिल में चमक उठता है और ख़ुद ख़ुदा उसकी मदद करता है।

(हुज्जतुल इस्लाम हुसैन अंसारियान)

❁ ❁ ❁

अच्छे और बुरे माहौल का असर

अपने दिल को पाक करना और गुनाहों को छोड़ देना और वह भी हमेशा के लिए, कोई आसान काम नहीं है बल्कि यह एक बहुत मुकिश्ल काम है। इन्सान हर वक़्त ख़तरों से भरे हुए गुनाहों के मैदान में रहता है। शैतान उसे बुराईयों की तरफ़ बुलाता रहता है और उसका दिल हमेशा बदलता रहता है। दुनिया में जो कुछ होता है उसका उस पर भी असर होता है और उसी के हिसाब से वह सुनता और देखता है। इन्सान का दिल रूहानी प्रोग्रामों, इबादतों और अच्छे कामों के माहौल में जाने से अच्छे काम करने की तरफ़ झुकता है, लेकिन बुरे लोगों के

बीच और गुनाहों से भरे प्रोग्रामों में जाने से इन्सान का दिल उसे गुनाहों की तरफ़ ले जाता है।

रूहानी माहौल देखने से इन्सान रूहानियत की तरफ़ खिंचता है और बुराईयों भरा माहौल देखने ने इन्सान गुनाहों की तरफ़ जाने के लिए तैयार हो जाता है। अगर वह किसी अय्याशी की जगह और शराब के माहौल में जाए तो अय्याशी की तरफ़ झुकता है और अगर किसी दुआ व इबादत के प्रोग्राम में जाए तो उसका ध्यान ख़ुदा की तरफ़ हो जाता है।

अगर दुनियादारों और दौलत के पुजारियों के साथ बैठता है तो दुनिया की तरफ़ चला जाता है और अगर ख़ुदा के अच्छे बन्दों के पास बैठता है तो अच्छाई की तरफ़ खिंचा चला जाता है।

इसलिए जो लोग अपने आप को पाक करने और गुनाहों को छोड़ने का इरादा रखते हैं, उनके लिए ज़रूरी है कि वह अपनी आँखों और कानों को गुनाहों भरे प्रोग्रामों और गुनाहों वाली जगहों से दूर रखें। न ही इस तरह के प्रोग्रामों में जाएं और न ही इस तरह के लोगों के साथ मेलजोल और दोस्ती न रखें।

अगर ऐसा नहीं करेंगे तो फिर हमेशा गुनाह करते रहेंगे और फिसलते रहेंगे।

इस्लाम चाहता है कि हमारा माहौल ऐसा हो जो गुनाहों को छोड़ने और अपने आप को पाक करने के लिए अच्छा हो। अगर हम ने ऐसा नहीं किया तो हम किसी भी तरह अपने ''नफ़्से अम्मारा'' पर कन्ट्रोल नहीं कर सकते क्योंकि बुरा माहौल इन्सान को बुराई की तरफ़ ही ले जाता है, यहाँ तक कि सिर्फ़ गुनाह के बारे में सोचना भी इन्सान को गुनाह की तरफ़ बुला लेता है।

इसी लिए इस्लाम हम से कहता है कि गुनाह की सोच को भी अपने दिमाग़ में आने का रास्ता न दो।

(आयतुल्लाह इब्राहीम अमीनी)

1-सूरए बक़रा/44
2-सूरए सफ़/2-3
3-सूरए हूद/88

किचन

recipe

आलू (छिले हुए और कद्दूकश किए हुए):	500 ग्राम
राई:	एक चाये का चम्मच
करी पत्ता (कटा हुआ):	एक खाने का चम्मच
अदरक (कद्दूकश किया हुआ):	एक चाये का चम्मच
सफ़ेद ज़ीरा:	एक चाये का चम्मच
मिर्च (कटी हुई):	ज़रूरत भर
हरा धनिया (कटा हुआ):	2 चाये के चम्मच
तेल:	2 चाये के चम्मच
आम का पाउडर (आमचूर):	एक चाये का चम्मच
नमक और लाल मिर्च:	ज़ायक़े के हिसाब से

आलू क़ीमा

तरकीब

1. तेल गर्म करके उसमें राई कड़कड़ाइए।
2. इसके बाद इसमें ज़ीरा भी मिला दीजिए और इतना तलिए कि हल्का सुनहरी ब्राउन हो जाए।
3. करी पत्ते डाल कर कुछ देर और पकाइए।
4. अब अदरक मिलाइए और कुछ सेकेंड के लिए पकाती रहिए। फिर नमक और लाल मिर्च डालकर एक मिनट के लिए और तलिए।
5. अब कद्दूकश किए हुए आलू डाल दीजिए। इसके बाद बर्तन को ढक कर कुछ मिनट के लिए हल्की आंच पर अपनी ही भाप में पकने दीजिए। थोड़ी-थोड़ी देर के बाद चम्मच चलाती रहिए।
6. जब आलू गल जाएं तो उनमें आम का पाउडर (आमचूर) डाल दीजिए।
7. आपकी डिश तैयार है। हरी मिर्च और हरे धनिए के साथ सजाकर सर्व कीजिए और मज़े लीजिए।

चिकन एग वेज सूप

चिकन (रेशा किया हुआ):	500 ग्राम
बंद गोभी (बारीक कटी हुई):	आधा कप
हरी प्याज़ (चॉप की हुई):	2 पीस
काली मिर्च पाउडर:	आधा चाय का चम्मच
नमक:	ज़ायक़े के हिसाब से
अंडा (फेंटा हुआ):	1 पीस
पानी:	आधा लीटर
कार्न फ़्लोर:	1 खाने का चम्मच
(आधा कप ठंडे पानी में घोल लीजिए)	

तरकीब

1. सॉस पैन में पानी डालकर पकाइए।
2. अब इसमें बंद गोभी, चिकन, हरी प्याज़, काली मिर्च पाउडर और नमक डालकर 15 मिनट धीमी आंच पर पकाइए।
3. फिर इसमें कार्न फ़्लोर डालकर मिक्स कर दीजिए और चमचे से बराबर चलाती रहिए।
4. इसके बाद इसमें थोड़ा-थोड़ा करके अंडा डालिए।
5. जब अंडा पक जाए तो चूल्हे से उतार लीजिए और सर्विंग डिश में निकाल कर गर्म-गर्म सर्व कीजिए।

सूरए काफ़िरून

■ आयतुल्लाह मकारिम शीराज़ी

सूरए काफ़िरून

यह सूरह मक्का में नाज़िल हुआ था और इसकी 6 आयतें हैं।

इस सूरे की आयतों में जो अन्दाज़ अपनाया गया है उस से पता चलता है कि यह सूरह उस वक़्त उतरा था जब मुसलमान गिनती में बहुत कम थे और मक्के में अकसर लोग नॉन-मुस्लिम और मुश्रिक थे। उन दिनों अल्लाह के रसूल[स०] पर मुश्रिकों की तरफ़ से काफ़ी दबाव था और उनकी पूरी कोशिश थी कि अल्लाह के रसूल[स०] को किसी भी तरह लालच, प्रेशर, धमकियों, बायकॉट वग़ैरा के ज़रिये तौहीद और ईमान के रास्ते से हटा कर शिर्क और कुफ़्र की तरफ़ ले आएं। लेकिन अल्लाह के रसूल[स०] उन से लड़े-झगड़े बिना उनकी बातों से साफ़ इनकार कर दिया करते थे और अल्लाह के रसूल[स०] की तरफ़ से मुश्रिकों को मायूसी ही हाथ आती थी।

अल्लाह के रसूल[स०] की सीरत सभी मुसलमानों के लिए आइडियल है और आपकी यह सीरत मुसलमानों को सिखाती है कि दीन और ईमान के मामले में कभी भी दुश्मनों के साथ कोई समझौता नहीं करना चाहिए और जब भी दुश्मन की तरफ़ से कोई डिमाण्ड या किसी तरह की कोई कोशिश हो तो दुश्मन को पूरी तरह से मायूस कर देना चाहिए।

इस सूरे में दो बार इस बात पर ज़ोर दिया गया है: ''मैं तुम्हारे ख़ुदाओं को नहीं मानता।'' और यह ज़ोर इसलिए दिया गया है कि ताकि दुश्मन मायूस हो जाए।

दूसरी बार कहा गया: ''तुम भी मेरे ख़ुदा की इबादत नहीं करते हो।'' और यह मुश्रिकों की हटधर्मी का सुबूत है।

इसका नतीजा यह है कि ''मैं अपने दीन यानी तौहीद पर रहूँगा और तुम अपने दीन यानी शिर्क पर रहो।''

सूरए काफ़िरून की फ़ज़ीलत

अल्लाह के रसूल[स०] ने अपनी एक हदीस में फ़रमाया है:

जिसने सूरए ''क़ुल या अय्युहल काफ़िरून'' पढ़ा वह ऐसा है जैसे उसने एक चौथाई क़ुरआन पढ़ लिया हो। इस सूरे के पढ़ने वाले से बुराईयां फैलाने और बग़ावत करने वाले शैतान दूर रहेंगे, वह शिर्क से बचा रहेगा और क़यामत के दिन के डर से भी बचा रहेगा।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] की एक हदीस है: ''मेरे बाबा ने मुझ से कहा था कि ''क़ुल या अय्युहल काफ़िरून'' एक चौथाई क़ुरआन है। वह जब भी यह सूरह पढ़ते थे तो कहा करते थे: मैं सिर्फ़ ख़ुदा की इबादत करता हूँ और सिर्फ़ ख़ुदा की इबादत करता हूँ।''

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

ख़ुदा के नाम से जो बड़ा मेहरबान और बहुत ज़्यादा रहम करने वाला है।

यह सूरह कब नाज़िल हुआ ?

हदीसों में आया है कि यह सूरह क़ुरैश के मुश्रिकों के बड़े सरदारों के बारे में उतरा है जैसे वलीद इब्ने मुग़ीरा, आस इब्ने वायल, हारिस इब्ने क़ैस वग़ैरा। यह लोग अल्लाह के रसूल[सं०] से कहते थेः ऐ मोहम्मद! तुम हमारे रास्ते पर चलो, हम भी तुम्हारे बताए रास्ते पर चलेंगे और बदले में वह सब कुछ तुम्हें भी देंगे जो हमारे पास है। एक साल तुम हमारे ख़ुदाओं की पूजा करो, अगले साल हम तुम्हारे ख़ुदा की इबादत करेंगे।

अल्लाह के रसूल[सं०] कह दिया करते थेः ख़ुदा की पनाह माँगता हूँ इस बात से कि किसी को उसके बराबर और उसका शरीक समझूँ।

वह कहते थेः कम से कम हमारे कुछ ख़ुदाओं को छू कर तो देखो और उनका थोड़ा एहतेराम तो करो, हम तुम पर ईमान ले आएंगे और तुम्हारे ख़ुदा की इबादत करेंगे।

अल्लाह के रसूल[सं०] जवाब देते थेः मैं सिर्फ़ अपने ख़ुदा के हुक्म से फ़ैसले करता हूँ।

यही वह हालात थे जब सूरए काफ़िरून उतरा था।

अल्लाह के रसूल[सं०] मस्जिदुल हराम के पास आए जहाँ क़ुरैश के कुछ सरदार इकट्ठा थे। अल्लाह के रसूल[सं०] एक ऊँचाई पर खड़े हुए और उनके सामने इस पूरे सूरे को पढ़ कर सुनाया। जब उन्होंने इस सूरे की बातों को समझ लिया तो पूरी तरह से मायूस हो गये और इसके बाद अल्लाह के रसूल[सं०] और उनके साथियों को सताना शुरु कर दिया।

आयत नम्बर-1

ऐ रसूल! कह दीजिए कि ऐ काफ़िरो!

आयत नम्बर-2

जिसे तुम पूजते हो मैं उसकी इबादत नहीं करता।

आयत नम्बर-3

और न ही तुम उसकी इबादत करते हो जिसकी इबादत मैं करता हूँ।

इस से अल्लाह के रसूल[सं०] ने अच्छी तरह से समझा दिया था कि उनका रास्ता मुश्रिकों के रास्ते से बिल्कुल अलग है। अल्लाह के रसूल[सं०] ने साफ़-साफ़ कह दिया थाः मैं कभी भी तुम्हारे बनाए हुए ख़ुदाओं की पूजा नहीं करूँगा। तुम भी हटधर्मी कर रहे हो यानी अपने पुरखों की अंधी तक़लीद कर रहे हो और उन्हीं के रास्ते पर बाक़ी रहना चाहते हो। अपने हाथों से बनाए हुए ख़ुदाओं की पूजा करवाने के बदले में तुम्हें जो फ़ायदा होता है उसकी वजह से कभी भी शिर्क छोड़ कर ख़ुदा की सच्ची इबादत के लिए तैयार नहीं हो।

आयत नम्बर-4

और न मैं उन बुतों की पूजा करने वाला हूँ जिन्हें तुम पूजते हो।

इस आयत में एक बार फिर बुतों की पूजा से साफ़ इनकार करते हुए मुश्रिकों को पूरी तरह मायूस कर दिया था।

आयत नम्बर-5

और न ही तुम उस ख़ुदा की इबादत करने वाले हो जिसकी मैं इबादत करता हूँ।

अल्लाह के रसूल[सं०] की तरफ़ से बुतों की पूजा का इनकार और मुश्रिकों की तरफ़ से ख़ुदा की इबादत के इनकार की बात को दोहराने की वजह यह थी कि यह जताना था कि इस मामले में कोई समझौता नहीं हो सकता। साथ ही इसका मक़सद मुश्रिकों को मायूस करना और यह समझाना भी है कि उनका रास्ता इस्लाम के रास्ते से बिल्कुल अलग है और तौहीद और शिर्क के बीच किसी तरह का कोई समझौता नहीं हो सकता।

आयत नम्बर-6

तुम्हारा रास्ता तुम्हारे लिए और मेरा दीन मेरे लिए।

यानी हमें तुम्हारे रास्ते पर चलने की ज़रूरत नहीं है, तुम्हारा रास्ता तुम्हीं को मुबारक हो और जल्द ही तुम अपनी हटधर्मी का अंजाम भी देख लोगे। ●

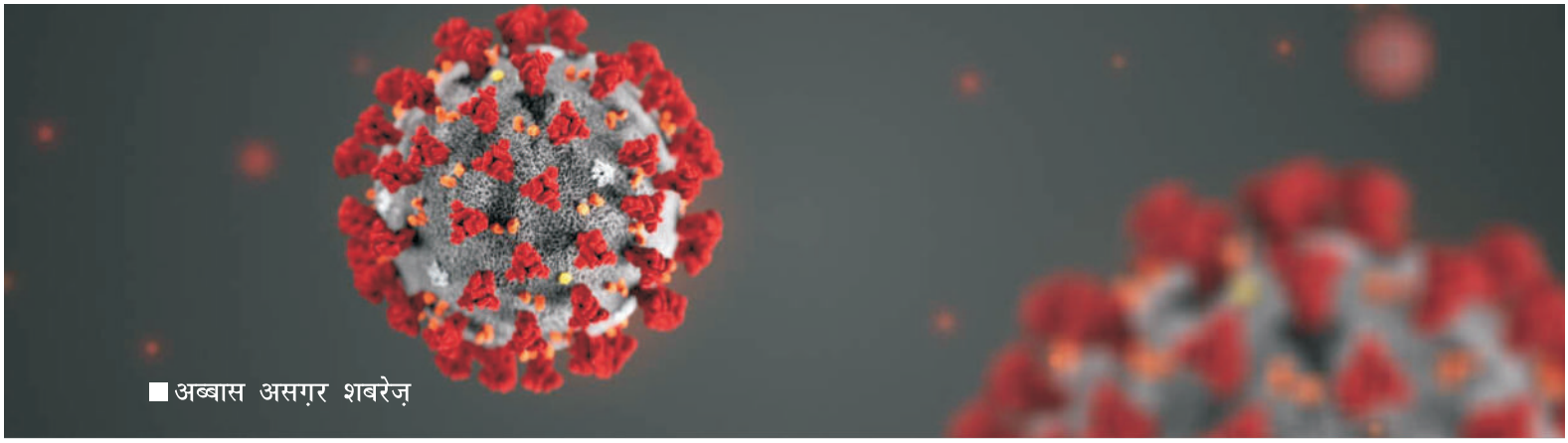

■ अब्बास असग़र शबरेज़

आइए!
अल्लाह के बंदों की मदद करें

इंडिया टूडे की रिर्पोट के हिसाब से हमारे मुल्क में लगभग 27 करोड़ लोग ग़रीबी की लाइन से नीचे ज़िंदगी बिता रहे हैं।

ऐसे लोग जो नार्मल हालात में भी बहुत कठिनाईयों के साथ अपनी ज़िंदगी जी पाते हैं, ज़ाहिर हैं कि लाक डाउन में तो उनके घरों में भुकमरी जैसे हालात हो गए होंगे।

ग़रीबों और ज़रूरतमंदों की मदद करना, उनके साथ हमदर्दी करना, उनके काम काम आना और उनकी ज़रूरतों को पूरा करना इस्लाम के बुनियादी टीचिंग्स में से है। दूसरों की मदद करने, उनके काम आने और उनकी रोज़ाना की ज़रूरतों को पूरा करने को इस्लाम ने सवाब का काम और अपने रब को राज़ी करने का नुस्ख़ा बताया है।

अल्लाह तआला ने मालदारों को अपने माल में से ग़रीबों की मदद करने का हुक्म भी दिया है। जिन लोंगों के हालात अच्छे हैं उन पर वाजिब है कि इन कठिन हालात में अपनी ताक़त भर ग़रीबों और ज़रूरतमंदों की मदद करें।

क़ुरआन में अल्लाह ने फ़रमाया हैः

''नेकी यह नहीं है कि अपना मुँह पूरब और पश्चिम की तरफ़ कर लो बल्कि असल नेकी तो उसकी है जो अल्लाह पर, आख़िरत पर, फ़रिश्तों पर, आसमानी किताबों पर और नबियों पर ईमान ले आए और अल्लाह की मोहब्बत में रिश्तेदारों, यतीमों, मोहताजों, मुसाफ़िरों, सवाल करने वालों और ग़ुलामों की आज़ादी के लिए माल दे।''

(सूरए बक़रा/177)

लाक डाउन की इस कठिन सिचुएशन में आज हमारा मुल्क हमारे आपसी मेल-जोल, हमारी आपसी मोहब्बत और मिलनसारी को चारों तरफ़ ढूँढ रहा है। इसलिए अल्लाह ने जिन लोंगों को सब कुछ दिया है उन्हें चाहिए कि वह अपनी ताक़त भर ग़रीबों और ज़रूरतमंदों की कदद करें। हमदर्दी और मोहब्बत के जज़्बे को ध्यान में रखते हुए अपने पास-पड़ोस, गली-मोहल्ले और शहर भर में कुछ ऐसा करें कि कोई भी आदमी किसी भी घर में भूखा न सोए या दवा न होने की वजह कहीं मर न जाए।

इस्लामी टीचिंग्स हमें यही सिखाती हैं कि ग़रीबों, अपाहिजों, बीमारों, बेवाओं, यतीमों और बेसहारा लोगों की देखभाल और उनके साथ हमदर्दी करना हमारी एक बहुत बड़ी ड्युटी है। जो लोग समाज से ग़रीबी व भुखमरी दूर करने और दूसरों की ज़रूरतें पूरी करने के लिए अपना माल-दौलत ख़र्च करते हैं, अल्लाह तआला उनके ख़र्च को अपने ज़िम्मे ले लेता है। साथ ही इस बात की गारंटी भी देता है कि अल्लाह के नाम पर ख़र्च किए गए माल को कई गुना बढ़ा दिया जाएगा।

दूसरों की मदद करना अल्लाह के यहाँ एक बहुत ही अच्छा काम माना गया है। असल में दूसरों के साथ हमदर्दी करके और उनकी मदद करके ही इंसान को सच्ची ख़ुशी मिलती है। यह वह ख़ुशी और सुकून है जिससे इंसान के दिल को सूकून के साथ-साथ अल्लाह की मर्ज़ी भी मिल जाती है।

अल्लाह के रसूल[सo] ने जहाँ हमें बार-बार ग़रीबों की मदद करने का हुक्म दिया है वहीं आप अपनी ज़िंदगी में ख़ुद भी हमेशा ग़रीबों, यतीमों, फ़क़ीरों और ज़रूरतमंदों की मदद किया करते थे।

हदीस में हैः ''एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है। न वह उस पर ज़ुल्म करता है और न ही मुश्किलों में उसे अकेला छोड़ता है।''

अगर कोई आदमी किसी दूसरे की मदद करता है तो बदले में अल्लाह भी उसकी मदद करता है।

अपने लिए तो सभी जीते हैं। लाक डाउन के इन हालात में आज ज़रूरत इस बात की है कि अब ज़रा दूसरों के लिए जी कर भी देखा जाए। दूसरों की मुश्किलों और

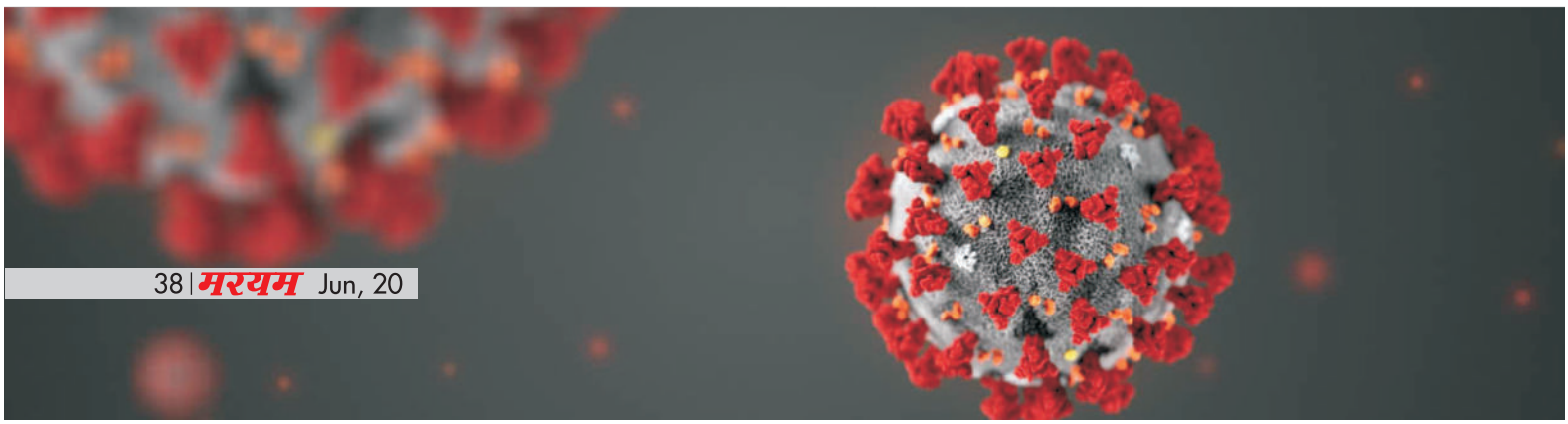

परेशानियों को महसूस करते हुए उनका हाथ बंटाया जाए। अगर हमारी मदद से किसी की जान बच सकती है, किसी की मुश्किल आसान हो सकती है, किसी का पेट भर सकता है, किसी का इलाज हो सकता है और किसी की ज़िंदगी में थोड़ी बहुत आसानी आ सकती है तो यह तो हमारे लिए एक बहुत ही ख़ुशी की बात होना चाहिए।

तभी तो इस्लाम ने इस काम पर इतना ज़ोर दिया है और हमें सिखाया है कि हमें किस तरह ग़रीबों, मोहताजों, यतीमों, बेवाओं और ज़रूरतमंदों की मदद करना है। इस्लाम सारे इंसानों की भलाई और सब के साथ हमदर्दी करने वाला दीन है।

क़ुरआन की एक आयत में अल्लाह फ़रमाता है: ''ऐ नबी! यह लोग आप से पूछते हैं कि अल्लाह के नाम पर क्या ख़र्च करें तो आप कह दीजिए कि तुम लोग जो भी ख़र्च करोगे वह तुम्हारे माँ-बाप, रिश्तेदारों, यतीमों, मिस्कीनों और भटके हुए मुसाफ़िरों के लिए होगा और तुम जो भी अच्छा काम करोगे ख़ुदा उसे ख़ूब जानता है।''

(सूरए बक़रा/215)

एक और आयत में अल्लाह फ़रमाता है: ''बेशक! हमारा पालने वाला अपने बंदों में से जिसके लिए भी चाहता है उसका रिज़्क़ (रोज़ी-रोटी) बढ़ा देता है और जिसके लिए चाहता है उसके यहाँ तंगी पैदा कर देता है। तुम जो कुछ भी उसकी नाम पर ख़र्च करोगे वह उसका बदला तुम्हें हर हाल में देगा और वही बहतरीन रिज़्क़ देने वाला है।''

(सूरए सबा/39)

इसी तरह अल्लाह के नाम पर अपनी पसंद की चीज़ें सदक़ा देने के बारे में अल्लाह फ़रमाता है: ''जब तक तुम अपनी पसंदीदा चीज़ अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करोगो तब तक तुम नेकी तक नहीं पहुँच सकते। और तुम जो कुछ भी अल्लाह की राह में दोगो अल्लाह उसे अच्छी तरह से जानता है।''

(सूरए आले इमरान/92)

जे लोग अपना माल अल्लाह के नाम पर रात में और दिन में छुपे-खुले ख़र्च करते हैं उनके लिए पालने वाले की तरफ़ से अज्र (बदला) है। इन लोगों को किसी तरह का न तो कोई डर होगा और न ही कोई ग़म।''

(सूरए बक़रा/274)

इस बारे में क़ुरआन ने मदद करने से आगे बढ़कर यहाँ तक कह दिया है कि ख़बरदार! इन लोगों के साथ न तो कभी घमंड के साथ बात करना और न ही सख़्ती से। जैसे यह आयत है:

''जब यह तुम से सवाल करें (कुछ मांगे) तो झिड़क मत देना।''

(सूरए ज़ुहा/10)

दूसरों की मदद करते हुए उनके साथ हमदर्दी करते हुए या सदक़ा देते हुए हमें इस बात का भी ध्यान रखना है कि हम कभी भी यह काम दिखावे के लिए न करें वरना हमारी सारी महनत और सारा सदक़ा या ख़ैरात बबार्द हो जाएगा। इस बारे में क़ुरआन में अल्लाह यूँ फ़रमाता है:

''ऐ ईमान वालो! अपने सदक़ों को एहसान जताकर और तकलीफ़ पहुँचाकर बर्बाद न करो उस आदमी की तरह जो अपना माल दुनिया को दिखाने के लिए ख़र्च करता है और उसका ईमान न ख़ुदा पर है और न आख़िरत पर। ऐसे आदमी की मिसाल उस चटटान के जैसी है जिस पर धूल जम गई हो और वह तेज़ बारिश के आते ही बिल्कुल साफ़ हो जाए।''

(सूरए बक़रा/264)

इसलिए दूसरों की मदद ज़रूर कीजिए और सदक़ा ज़रूर निकालिए लेकिन ध्यान रहे कि कहीं ऐसा न हो कि रियाकारी यानी दिखावे की वजह से सब कुछ बर्बाद न हो जाए क्योंकि अल्लाह को दिखावा बिल्कुल भी पसंद नहीं है। अल्लाह चाहता है कि जो काम भी किया जाए वह बस अल्लाह के नाम पर किया जाए।

सदक़ा और ख़ैरात इंसान को मुसीबतों और तकलीफ़ों से बचाते हैं और दूसरों की मदद करने का एक बहुत अच्छा सोंस हैं लेकिन अगर घमंड और दिखावे की वजह से इस काम से लेने वाले को तकलीफ़ पहुँच रही हो या वह किसी तरह से अपनी बेइज़्ज़ती महसूस कर रहा हो तो फिर हमारा सारा सदक़ा और ख़ैरात बर्बाद होकर रह जाएगा।

अल्लाह ने अपने आख़िरी रसूल हज़रत मोहम्मद[स०] को सारी दुनिया के लिए रहमत बनाकर भेजा था। आपकी ज़िंदगी ग़रीबों और ज़रूरतमंदों के साथ हमदर्दी करने और उनसे मोहब्बत करने का सबसे अच्छा नमूना है। किताबों में यहाँ तक लिखा हुआ है कि अल्लाह के रसूल[स०] उस वक़्त तक खाना नहीं खाते थे जब तक उन्हें यह भरोसा नहीं हो जाता था कि अस्हाबे सुफ़्फ़ा ने भी खा लिया है। अस्हाबे सुफ़्फ़ा आपके वह सहाबी थे जो मस्जिद में एक कोने में रहते थे। यह लोग बहुत ग़रीब थे और इनके पास जीने के लिए कुछ भी नहीं था।

आइए! अपनी पर्सनल ज़िंदगी से बाहर निकलते हैं और थोड़ा सा दूसरों के बारे में भी सोचते हैं। कुछ दूर तक उनका हाथ थामते हैं और उनकी मदद करने की कोशिश करते हैं।

अल्लाह हमारी भी मदद करेगा।

■ डॉ. रिज़वान असद ख़ान

तो मानते क्यों नहीं ?

इस युनिवर्स के एक सिरे से दूसरे सिरे तक की दूरी 93 अरब नूरी साल (Light Years) है और यह लगातार फैल रही है। जबकि रौशनी की स्पीड 3 लाख किलोमीटर हर सेकेंड है। अगर रौशनी की किरन एक सिरे से सफ़र शुरु करे तो वह कभी भी दूसरे सिरे तक नहीं पहुँच सकती। यानी साइंस के पास कोई ऐसा तरीक़ा है ही नहीं कि वह जान सके कि इस युनिवर्स के दूसरे सिरे में क्या हो रहा है।

वैसे हायर डायमेन्शंस में पहुँचने से यह काम हो सकता है। स्ट्रिंग थ्योरी के मुताबिक़ वक़्त को मिलाकर कुल 11 डायमेन्शंस हैं जिनमें से हम सिर्फ़ 3 में ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। हमारे चौथे डायमेन्शन में जाने से हमारी क्या हालत होगी, इसे एक मिसाल से समझते हैं।

मान लीजिए कि कोई चीज़ 2 डायमेन्शंस तक की काम कर सकती है जैसे काग़ज़ के एक टुकड़े के अन्दर। अगर वह किसी तरह काग़ज़ से निकल कर आपके कमरे में आ जाए तो उसे अचानक इतने ज़्यादा डेटा को अपने सेन्सेज़ और अपने दिमाग़ में सम्भालना पड़ेगा कि वह चीज़ काम करना ही छोड़ देगी। यह सब कैसे होगा इसे बता पाना बहुत मुश्किल है। अगर हम चौथे डायमेन्शन में चले जाएं तो यही हाल हमारा होगा। यह वह बात है जो साइंस भी मानती है।

दुनिया में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो सोते-सोते अपने जिस्म से आज़ाद होकर रूहानी सफ़र का तजुर्बा कर चुके हैं। जो हवा में ख़ुद अपने सोऐ हुए जिस्म को देख सकते हैं और दूसरे रूहानी जिस्मों से मुलाक़ात कर सकते हैं और तरह-तरह के एक्स्पीरियंस के ज़रिये यह हालत अपनी मर्ज़ी से भी ख़ुद पर ला सकते हैं। यानी उनमें हायर डायमेन्शन्स (Out of Body Experience) में जाने की ताक़त पैदा हो जाती है।

इसी तरह हमारा दीन जब मोजिज़ों, करामतों, बरज़ख़, आख़िरत, जन्नत, जहन्नम की बात करता है तो यह वह डायमेन्शंस हैं जिन्हें समझना हमारी इस 3 डायमेन्शंस की आदत रखने वाली अक़्ल की समझ से बाहर है।

अब जो लोग अक़्ल को कसौटी मानते हैं वह इन ''ग़ैबी'' चीज़ों का इनकार कर देते हैं। यह लोग दूसरी तरह के लोगों के रूहानी सफ़र को भी उनका वहम मानते हैं और पैग़म्बरों के तजुर्बों जैसे वाक़िअ-ए-मेराज का भी मज़ाक़ उड़ाते हैं। लेकिन जब नील डी ग्रास टाइसन जैसा ख़ुदा का मुनकिर उन्हें स्ट्रिंग थ्योरी पढ़ा रहा होता है तो वाह-वाह करते हैं, जबकि वह ख़ुद मान रहा होता है कि हमारी फ़िज़िक्स के फ़ार्मूले हायर डायमेन्शंस में लागू नहीं होते।

फिर मसला क्या है ? जिस बुनियाद पर आप मज़हब से जुड़ी ग़ैब वाली बातों का इनकार करते हैं, रूहानी सफ़र का तजुर्बा रखने वालों का इनकार करते हैं, जिन्नात से ताल्लुक़ रखने वालों का इनकार करते हैं, उसी बुनियाद पर स्ट्रिंग थ्योरी का इनकार क्यों नहीं करते ?

जब एक ख़ुदा को न मानने वाला कोई आदमी नॉविल लिखता है कि फ़ुलाँ कैरेक्टर

ने एक दिखाई न देने वाले दरवाज़े (वार्प प्वाइंट) से गुज़र कर चौथे डायमेन्शन में जाकर अपने साथियों को देखा तो उसे उनकी हड्डियों का गूदा तक नज़र आ रहा था, (Death's End by Cixin Liu) तो इस पर सब बहुत ख़ुश होते हैं... लेकिन यही बात जब हदीस में जन्नत में पाई जाने वाली तरह-तरह की चीज़ों के बारे में कही जाती है तो सब मुँह बनाने लगते हैं ?

असल वजह यह है कि ग़ैब पर यक़ीन करने से इन ग़ैबी चीज़ों का इल्म देने वाले ख़ुदा को भी मानना पड़ता है, उसकी बन्दगी करना पड़ती है और फिर उसकी हर बात मानना पड़ती है और उसे नाराज़ करने वाली हर बात से रुकना पड़ता है। जबकि यह लोग तो बस यह चाहते हैं कि इन्हें किसी की इताअत न करना पड़े, किसी की इबादत न करना पड़े यानी जो जी में आए बस वही करें...

बिल्कुल बच्चों की तरह... जो बड़ों को इसलिए बुरा समझते हैं क्योंकि वह उन पर पाबन्दियाँ लगाते हैं, ज़बरदस्ती स्कूल भेजते हैं, बुरी बातें करने से रोकते हैं, गन्दी चीज़ें खाने से रोकते हैं, जबकि उनकी अपनी अक़्ल के मुताबिक़ न स्कूल जाना ज़रूरी होता है और न वह बात बुरी होती है जो वह कर रहे होते हैं, न वह चीज़ गन्दी होती है जो वह खा रहे होते हैं।

अपने आप को सबसे ज़्यादा अक़लमन्द समझने वाले जब ख़ुदा का इनकार करते हैं तो असल में वह भी दिमाग़ी तौर पर बच्चे ही होते हैं जो हर उस चीज़ का इनकार कर देते हैं जो उनके नन्हे-मुन्ने छोटे से दिमाग़ में समा नहीं पाती। ●

जो औरत ऐसा करती है वह...

– जब कोई औरत घर में सफ़ाई-सुथराई के लिए किसी चीज़ को एक जगह से उठाकर दूसरी जगह रखती है तो ख़ुदा उस पर रहमत की नज़र डालता है।

(पैग़म्बरे अकरम[स०])

– जब कोई औरत अपने बच्चे को दूध पिलाती है तो ख़ुदा हर बार दूध पिलाने के बदले उसे एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब देता है। (पैग़म्बरे अकरम[स०])

– जब कोई औरत शौहर की ख़िदमत करती है तो वह जिहाद करती है।

(हज़रत अली[अ०])

– जब कोई औरत अपने शौहर के लिए ख़ुश्बू का इस्तेमाल करती है तो ख़ुदा उसे बेहतरीन औरत का दर्जा देता है।

(इमाम जाफ़र सादिक़[अ०])

– जो औरत अपने शौहर के बुरे अख़्लाक़ पर सब्र करती है तो उसका नाम उन लोगों में लिखा जाता है जो क़यामत के दिन हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] के साथ होंगी।

(इमाम सादिक़[अ०])

– जो औरत अपने शौहर को ख़ुश रखती है, मरने के बाद क़ब्र की पहली रात में यही चीज़ उसके काम आती है।

(इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०])

– औरत का अपने शौहर को एक गिलास पानी पिलाना, एक साल तक नमाज़े शब पढ़ने और रोज़े रखने से बेहतर है

(पैग़म्बरे इस्लाम[स०])

– जब कोई औरत अपने शौहर को ठण्डा पानी पिलाती है तो यह काम उसके 70 गुनाहों को माफ़ कर देता है।

(पैग़म्बरे अकरम[स०])

– जब कोई औरत घर में खाने के बर्तन धोती है तो ख़ुदा उसके गुनाहों और ग़लतियों को माफ़ कर देता है।

(हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०])

– जब कोई औरत घर में कपड़े सीती है तो ख़ुदा उसके हर धागे के बदले में उसके लिए सौ नेकियाँ लिखता है और उसके सौ गुनाह मिटा देता है।

(हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०])

– जो औरत अपने बच्चों के बालों में कंघी करती है और उनके कपड़े धोती है, ख़ुदा बच्चों के हर बाल के बदले उसके लिए एक नेकी लिखता है और एक गुनाह को मिटा देता है और उसे लोगों की नज़र में इज़्ज़त देता है।

(हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०])

– जो औरत शौहर की इताअत करते हुए इस दुनिया से जाती है, जन्नत उसके लिए लिख दी जाती है।

(हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०])

– जो औरत अपने शौहर को एक बार पानी पिलाती है ख़ुदा उसे एक साल की इबादत का सवाब दता है, जैसे उसने साल भर दिन में रोज़े रखे हों और रातों को इबादत की हो। ख़ुदा हर बार पानी पिलाने के बदले में जन्नत में उसके लिए एक शहर बना देता है और उसके साठ गुनाह माफ़ कर देता है। (इमाम जाफ़र सादिक़[अ०])

(वसायलुश्शीआ, 2/93)

Subscription Form

हां, मैं, नीचे लिखी स्कीम के तहत ***मरयम*** की सब्सक्राइबर बनना चाहती/चाहता हूं।

S.No.:...............

निशान	साल	इश्यूज़	सालाना कवर कीमत	आप दें
☐	1 Year	12	360	360
☐	2 Year	24	720	700
☐	3 Year	36	1080	1000

*Name: Mr./Mrs./Miss ____________________ Date of birth Day / Month / Year

*Father/Husband'sName: ____________________

Education: ____________________ Profession: ____________________

*Address: H/No: ____________________

Post : ____________________

City/Vill.: __________ Distt.: __________ State: __________ Country.: __________

Land Mark.: ____________________ Pin: __________ P.O.Box No.: __________

*Mobile No: __________ Phone (Res) __________

e-mail: ____________________

मौजूदा सब्सक्राइबर्स अपनी कस्टमर ID लिखें: __________ Date .... Signature............................

For Office Use:

subscription from................................to..........................Subscription ID ______ Receipt no. ....

Address: 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

सब्सक्राइबर्स सुविधाएं अगले अंक से उपलब्ध होंगी. समस्त विवाद केवल लखनऊ के सक्षम न्यायालयों और फोरमों के विशिष्ट अधिकार क्षेत्र के अधीन है.

यह आर्डर फार्म भेजी जाने वाली रकम के साथ भेजें।

*नियम व शर्तें लागू।

मैग्ज़ीन नार्मल डाक से भेजी जाती है। रजिस्टर्ड डाक से मंगाने के लिए Rs. 240 और देना होंगें।

Monthly Magazine

मरयम

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017 email: maryammonthly@gmail.com

इजाज़ा

मरयम मैग्ज़ीन को ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए इसको लागत से आधी क़ीमत पर रीडर्स को दिया जाता है जिसकी वजह से इदारे को आप सभी लोगों की फ़ाइनेंशल मदद की सख़्त ज़रूरत है।

हमारी कोशिश है कि इस मैग्ज़ीन के ज़रिए दीनी मालूमात को बेहतरीन क्वालिटी में आप सभी लोगों तक पहुंचाया जाता रहे।

TAHA FOUNDATION

AN ISLAMIC SOCIOL-WELFARE ORGANISATION

LUCKNOW-INDIA

Ref: TF/02/13 Date: 04/03/2013

بسمه تعالی

محضر مبارک حضرت آیة الله العظمی سید علی سیستانی دامت برکاتکم

سلام علیکم و رحمة الله و برکاته

با عرض سلام و آرزوی سلامتی حضرتعالی و اسلام و مسلمین بعرض می رساند که موسسه طه که با همت عده ای از فضلا و فارغ التحصیلان قم برای انجام امور دینی فرهنگی و اجتماعی که باعث پیشرفت مسلمانان و سبب بیداری آنان باشد، تشکیل شده است و حدودا ۱۴ سال است فعالیتهای ذیل را در زمینه های مختلف انجام می دهد :

۱. راه اندازی شبکه تلویزیون طه

۲. ایجاد استودیو و مرکز پخش تولید

۳. راه اندازی مجله ماهیانه ویژه بانوان بنام "مریم" به زبان هندی که در حال حاضر به ۱۰۹ شهرستان های هندوستان ارسال می شود و به نصف قیمت به فروش می رسد.

۴. راه اندازی سایت www.wahabiyat .com

۵. راه اندازی سایت www.ishraaq.in

۶. برگزاری سمینار، همایش و نشستهای علمی

۷. ترجمه و چاپ کتابهای مذهبی

همین طور برای آینده امور ذیل را برنامه ریزی کرده است :

راه اندازی سایت maryammagazine.com

راه اندازی شبکه ماهواره ای طه

راه اندازی حوزه علمیه در هندوستان طبق نیاز های روز

راه اندازی مدارس غیر انتفاعی

برای ادامه فعالیتها و وصول به اهداف خود نیاز به اجازه مصرف سهم امام عج الله تعالی فرجه الشریف را دارد .

لذا از جنابعالی تقاضا داریم که به این موسسه سالیانه (۵۰۰۰۰۰۰) پنج ملیون روپیه هندی اجازه مصرف سهم امام عج الله تعالی فرجه الشریف را عنایت بفرمایید .

از لطف جنابعالی که مبذول می فرمایید پیشاپیش تشکر می نماییم

سید محمد حسن نقوی

دبیر کل موسسه طه

لکهنو، هندوستان

Imambara Ghufraan Maab, Chowk- Lucknow ... 9936653509 tahafoundation@gmail.com

इजाज़ा आयतुल्लाह सीस्तानी

TAHA FOUNDATION

AN ISLAMIC SOCIAL WELFARE ORGANISATION

P.O.Box No.:27 Chowk Lucknow UP-India

Ref.: ... Date: ...

Chief Patron :
Imam-e-Zamana (a.s.)

Patron :
Syed Kalbe Jawad Naqvi

Founder :
Syed Nazar Abbas Rizvi

President :
S.Mohd. Faiyyaz Baqer

Vice President :
Akhter Abbas Joun Khan

General Secretary :
Qamar Mehdi

Joint Secretary :
Syed Ali Zafar Zaidi

Asst. Secretary :
Syed Mohd. Hasan Naqvi

Propagation Secretary :
Abbas Asghar Shabrez

Treasurer :
Syed Mohd. Aqeel Zaidi

بسمه تعالی

محضر مبارک

رهبر معظم انقلاب اسلامی

حضرت آیة الله العظمی آقای سید علی حسینی خامنه ای دام ظلکم العالی

سلام علیکم و رحمة الله و برکاته

پس از سلام و دعا برای قبولی طاعات و عبادات و سلامتی جناب عالی و اسلام و مسلمین معروض داریم که "طه فاؤنڈیشن" (موسسه طه) که با همت عده ای از طلاب و فضلای هندوستان برای انجام امور فرهنگی و اجتماعی که باعث پیشرفت مسلمانان و سبب بیداری آنان باشد تشکیل شده است برای وصول به اهداف خود که در گزارشی که به این نامه پیوست می باشد نیاز به اجازه مصرف سهم امام علیه السلام را دارد.

لذا از حضرت عالی تقاضا می کنیم که به این موسسه ۵۰۰۰۰۰۰ (پنج ملیون روپیه هندی) اجازه صرف سهم امام عجل الله تعالی فرجه الشریف عنایت بفرمایید.

از لطف و محبت جنابعالی که مبذول می فرمایید، قبلا سپاسگذاریم.

والسلام علیکم و رحمة الله و برکاته

سید محمد فیاض باقر

رئیس موسسه طه

P.O. Box :4167, QUM IRAN Phone : (+98-251)6607437, 7720901-8 Ext.: 820, 476, 339, E-Mail: taha_foundation@yahoo.com, www.ishraaq.net

इजाज़ा आयतुल्लाह ख़ामेनई

RNI NO. UPHIN/2012/43577

ENGLISH MEDIUM

taha
SCHOOL

Our Focus

- CBSE Curriculum
- Low Student-Teacher ratio
- Interactive teaching techniques
- Loving and caring atmosphere
- Qualified & Dedicated Teachers
- Deeni Taleem

ADMISSION OPEN
Pre-School To Class V

Pre-School Also Available

MUSAHIB GANJ, LUCKNOW
8840206083, 6392442920